

रीवा

02

जून 2025
सोमवार

दैनिक

मीडिया ऑडिटर



भारत ने एशियाई...

@ पेज 7

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

मोदी कैबिनेट में मंत्री रहते भी विधानसभा चुनाव लड़ेंगे चिराग पासवान!



नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुआई वाली एनडीए सरकार के मंत्री चिराग पासवान बिहार विधानसभा चुनाव लड़ने का मन बना रहे हैं। चिराग के बाद उनके बहनोई अरुण भारती ने भी इसके संकेत दिए हैं। उन्होंने यहां तक

● बहनोई अरुण भारती ने दिए संकेत

कह दिया कि चिराग को किसी सामान्य सीट से चुनाव लड़ना चाहिए। चिराग पासवान के बहनोई और जमुई से सांसद अरुण भारती ने चिराग पासवान के किसी सामान्य सीट से चुनाव लड़ने की बात कही है। इससे पहले चिराग पासवान खुद कई बार यह कह चुके हैं कि वह बिहार



विधानसभा का चुनाव लड़ना चाहते हैं। पिछले सप्ताह चिराग पासवान ने हाजीपुर में विधानसभा चुनाव लड़ने की बात कही थी। अरुण भारती ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा -जब नेता पूरे बिहार का है, तो सीट का

दायरा क्यों सीमित हो ? कार्यकर्ताओं की यह भी भावना है कि इस बार चिराग पासवान जो बिहार विधानसभा के चुनाव में किसी अश्विष्ठ सीट से नहीं, बल्कि एक सामान्य सीट से चुनाव लड़ेंगे चिराग पासवान अब सिर्फ एक समुदाय की नहीं, पूरे बिहार की उम्मीद हैं।-

हाजीपुर से सांसद हैं चिराग: चिराग पासवान हाजीपुर लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र से सांसद और मोदी सरकार में कैबिनेट मंत्री हैं। चिराग कुमार पासवान वर्तमान मोदी 3.0 कैबिनेट में कैबिनेट मंत्री हैं। उन्होंने 9 जून 2024 को खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री के रूप में शपथ ली थी। उन्हें पीएम मोदी का हनुमान भी कहा जाता है। पीएम मोदी के साथ उनके रिश्ते काफी अच्छे हैं और देना हमेशा गर्मजोशी के साथ मिलते हैं।

लोकसभा चुनाव 2024 में बढ़ा चिराग का कद: चिराग पासवान के चाचा पशुपति पासन ने सांसदों के साथ लेकर अलग पार्टी बना ली थी और एनडीए में शामिल हो गए थे। ऐसे में चिराग के खेमे में कोई सांसद नहीं बचा था। इसके बाद उन्होंने लगातार मेहनत की और एनडीए में शामिल होकर अपने नेताओं के लिए टिकट हासिल किया। इसके बाद जनता के बीच अपनी पकड़ बनाई और पार्टी के पांच उम्मीदवारों को जीत दिलाने में सफल रहे। एनडीए की गठबंधन सरकार में उन्हें मंत्री पद भी दिया गया। अब वह पीएम मोदी के करीबी नेताओं में शामिल हैं और उनके पास मंत्रालय भी है। ऐसे में उनके विधानसभा चुनाव लड़ने की संभावना कम हो, लेकिन उन्होंने खुद और अब उनके जीजा अरुण बहनोई ने इसके संकेत दिए हैं।

संक्षिप्त समाचार

बांग्लादेश की पूर्व पीएम शेख हसीना की बढ़ी मुश्किलें

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की मुश्किलें अब बढ़ने वाली हैं। बांग्लादेश के अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण ने रविवार को शेख हसीना और दो अन्य व्यक्तियों को पिछले वर्ष छत्रों के नेतृत्व में हुए विरोध प्रदर्शनों को हिंसक रूप से दबाने के मामले में सामूहिक हत्या सहित कई गंभीर आरोपों में अभ्यारोपित कर दिया है। रविवार की कार्यवाही के बाद यह तय हो गया है कि हसीना के खिलाफ मुकदमा उनकी अनुपस्थिति में शुरू किया जाएगा। बांग्लादेश में यह प्रक्रिया उस समय शुरू हुई है जब हसीना सरकार के सत्ता से हटने को लगभग दस महीने बीत चुके हैं। इस मामले में तीन सदस्यीय न्यायाधिकरण पीठ ने अभियोजन पक्ष द्वारा हसीना पर प्रदर्शनों को क्रूरता से कुचलने के आरोप औपचारिक रूप से दर्ज किए जाने के बाद कहा, -हम आरोपों को



संज्ञान में लेते हैं। इसके साथ ही न्यायाधिकरण ने शेख हसीना और तत्कालीन गृह मंत्री अस्तुज्जमा खान कमाल के खिलाफ एक नया गिरफ्तारी वारंट भी जारी किया है। तीसरे आरोपी, उस समय के पुलिस महानिरीक्षक चौधरी अब्दुल्ला अल-मामून फिलहाल हिरासत में हैं, और उनके खिलाफ मुकदमा उनकी उपस्थिति में ही चलेगा। यह पहली बार है कि बांग्लादेश के इतिहास में किसी न्यायाधिकरण की कार्यवाही का टेलेविजन पर सीधा प्रसारण किया गया है। कहा जा रहा है कि इसका मतलब भारत में शरण लेकर रह रही शेख हसीना को सीधा संदेश देने है। ताकि वह दहशत में आ सकें। गौरतलब है कि शेख हसीना की सरकार पिछले वर्ष 5 अगस्त को छत्रों के विरोध प्रदर्शनों के बाद सत्ता से हट गई थी। इसके बाद से उनके खिलाफ कई अपराधिक मुकदमे चलाए जा रहे हैं।

एशिया-प्रशांत क्षेत्र को बीजिंग से खतरा बताए जाने से हेगसेथ पर भड़का चीन

बीजिंग (एजेंसी)। एशिया-प्रशांत क्षेत्र को बीजिंग से खतरा बताने जाने पर चीन अमेरिका पर भड़क उठा है। चीन ने रविवार को अमेरिकी रक्षा सचिव पीट हेगसेथ द्वारा एशियाई देश (खासकर चीन) को -खतरा-कहे जाने की आलोचना की और उन पर शीत युद्ध (कोल्ड वार) की मानसिकता फैलाने का आरोप लगाया। बता दें कि दोनों देशों के बीच हाल की कई क्रमिक घटनाओं से वाशिंगटन और बीजिंग के बीच तनाव और



बढ़ गया है। चीन के विदेश मंत्रालय ने कहा कि हेगसेथ ने एक दिन पहले सिंगापुर में आयोजित शांरी-ला संवाद (एक वैश्विक सुरक्षा सम्मेलन) में बीजिंग को बदनाम करने वाले झूठे आरोप लगाए। मंत्रालय ने यह भी आरोप लगाया कि अमेरिका क्षेत्र में संघर्ष और टकराव को बढ़ावा दे रहा है। बयान में कहा गया, -हेगसेथ ने क्षेत्र के देशों की शांति और विकास की अपील को जानबूझकर कोड़ाकर दिया।- चीन ने कहा, -अमेरिका को बुझाव देना में कोई भी देश %आधिपत्यवादी शक्ति% नहीं कहा जा सकता। बीजिंग ने यह भी आरोप लगाया कि वाशिंगटन एशिया-प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता को कमजोर कर रहा है। बता दें कि हेगसेथ ने शनिवार को सिंगापुर में कहा था कि वाशिंगटन बीजिंग द्वारा उत्पन्न तेजी से बढ़ते खतरों का मुकाबला करने के लिए विदेशों में अपनी रक्षा क्षमताएं मजबूत करेगा। अमेरिका ने कहा था कि विशेष रूप से ताइवान पर चीन के आक्रामक रुख को देखते हुए हम ऐसा करेंगे।

आंधी की वजह से एयर टर्बुलेंस में फंसा इंडिगो का विमान, यात्रियों में हड़कंप



नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में आए आंधी-तूफान की वजह से इंडिगो का विमान एयर टर्बुलेंस में फंसा रहा जिसके चलते दिल्ली एयरपोर्ट पर लैंडिंग में देरी हुई। यह विमान रायपुर से दिल्ली आ रहा था। धूल भरी आंधी की वजह से फ्लाइट में काफी देर तक टर्बुलेंस होता रहा। इस दौरान यात्रियों में हड़कंप मचा रहा। हालांकि बाद में विमान को सुरक्षित लैंड करा लिया गया। बताया जाता है कि टच डाउन से पहले हालात को देखते हुए पायलट ने विमान की लैंडिंग नहीं की और विमान को ऊपर ले लिया। आसमान में कई चक्कर लगाने के बाद जब 80 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही हवा थोड़ी शांत हुई तब जाकर फ्लाइट 6१३ 6313 को लैंड कराया गया। पायलट की सूझबूझ से विमान की सेफ लैंडिंग हुई। लेकिन इस दौरान यात्रियों में हड़कंप मचा रहा। इसका वीडियो भी सामने आया है।

‘सत्ता, धन, भूमि, सिंडिकेट... असम सरकार में गहराई तक लिप्त’

गौरव गोगोई बोले- कांग्रेस को मजबूत करना ही होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी के नवनीयुक्त अध्यक्ष गौरव गोगोई ने भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) नीत राज्य सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ मोर्चे को केवल -सत्ता, धन, भूमि और सिंडिकेट- की परवाह है, जिसकी वजह से गुवाहाटी में विनाशकारी बाढ़ और जलभराव की स्थिति उत्पन्न हुई है। गोगोई ने इस स्थिति के लिए मुख्य कारण सत्तारूढ़ पार्टी के करीबी मंत्रियों और लोगों द्वारा आर्द्रभूमि पर किए गए अतिक्रमण को बताया। लोकसभा में कांग्रेस के उपनेता गौरव गोगोई ने रविवार सुबह शिवसागर से नागांव तक 250 किलोमीटर लंबी यात्रा की शुरुआत की। यात्रा के दौरान हजारों समर्थकों के साथ उनका काफिला शाम को जोरहाट और गोलाघाट से गुजरा। शिवसागर शहर में ऐतिहासिक शिव दौल (मंदिर) के दर्शन करने के बाद संवाददाताओं से बात करते हुए गोगोई ने कहा, -यह सरकार सत्ता, धन, भूमि हड़पने और सिंडिकेट में गहराई तक लिप्त है। गुवाहाटी



के आम लोगों की जरूरतों के बजाय अनियोजित निर्माण, भूमि हड़पना और ठेकेदार केंद्रित फ्लाइंग जेट प्राथमिकता बन गए हैं।-

असम की राजधानी गुवाहाटी में शुक्रवार को भारी बारिश के बाद लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। भारी बारिश की वजह से लगभग सभी सड़कें और कई रिहायशी इलाके जलमग्न हो गए हैं। दो दिन से लगातार हो रही बारिश के कारण सभी इलाकों में घुटनों तक पानी भर गया है, जबकि कुछ जगहों पर तो इससे भी अधिक पानी भरा है।

क्रिकेटर रिकू सिंह और सांसद प्रिया सरोज करेंगे शादी

सगाई 8 जून को लखनऊ में होगी और शादी इसी साल 18 नवंबर को वाराणसी के होटल ताज में होगी

जौनपुर (एजेंसी)। भारत के स्टार क्रिकेटर रिकू सिंह और सपा सांसद प्रिया सरोज की सगाई और शादी की तारीख सामने आ गई है। दोनों जल्द एक नए रिश्ते की शुरुआत करने वाले हैं। दोनों की सगाई 8 जून को लखनऊ में होगी और शादी इसी साल 18 नवंबर को वाराणसी के होटल ताज में होगी। प्रिया सरोज के पिता और जौनपुर के केराकत विधानसभा सीट से सपा विधायक तूफानी सरोज ने बताया, सगाई में केवल परिवार के लोग और करीबी दोस्त और रिश्तेदार ही शामिल होंगे। वहीं शादी में ग्रैंड सेलिब्रेशन होगा और उसमें क्रिकेटर्स, बॉलीवुड स्टार्स, विज्ञेयसर्ग और प्रमुख राजनेता शामिल हो सकते हैं। सपा विधायक तूफानी सरोज ने बताया, अलीगढ़ में रिकू सिंह के परिजनों से मुलाकात के बाद दोनों परिवारों की सहमति से यह रिस्ता तय हुआ। रिकू और प्रिया एक-दूसरे को पहले से जानते हैं। प्रिया की सहेली के पिता (जो एक क्रिकेटर हैं) के माध्यम से



दोनों की मुलाकात हुई थी। दोनों ने परिजनों की रजामती से शादी का फैसला लिया।
कौन हैं प्रिया सरोज; कहाँ से की है पढ़ाई? प्रिया सरोज उत्तर प्रदेश के मछलीशहर लोकसभा क्षेत्र से 2024 के

आम चुनाव में पहली बार सांसद बनी हैं। वह पेशे से अधिवक्ता हैं और उनकी उम्र 26 साल है। उनके पिता का नाम तूफानी सरोज है, जो जौनपुर के केराकत विधानसभा सीट से सपा विधायक हैं। प्रिया सरोज का जन्म

वाराणसी में हुआ था। उन्होंने नई दिल्ली के एयर फोर्स गॉल्डन जुबली इंस्टीट्यूट से स्कूली पढ़ाई की है और फिर दिल्ली विश्वविद्यालय से बीए और एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा से एलएलबी की है। वे सुप्रीम कोर्ट में वकालत कर चुकी हैं। रिकू सिंह भारतीय क्रिकेटर हैं। उन्होंने भारत के लिए 2 एकदिवसीय और 33 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं। वह अपनी धारदार बल्लेबाजी के लिए जाने जाते हैं। वह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए खेलते हैं। रिकू का जन्म यूपी के अलीगढ़ में हुआ। वह एक गरीब परिवार से थे। उनके पिता एलपीजी सिलेंडर डिलीवरी का काम करते थे। पांच भाई-बहनों में तीसरे नंबर पर रिकू ने काफी इकोनॉमिक पेशानियां छेलीं लेकिन आज वह ऊंचे मुकाम पर हैं। उन्होंने ये मुकाम अपनी मेहनत और लगन से हासिल किया है।

दिल्ली में हुआ सिलेंडर ब्लास्ट, तीन नाबालिग भाइयों सहित चार झुलसे

दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर-पूर्वी दिल्ली के सुंदर नगरी इलाके में शनिवार दोपहर भाइयों सहित चार लोग गंभीर रूप से झुलस गए। स्थानीय अधिकारी ने कहा कि विस्फोट शाम करीब साढ़े चार बजे एक भंडारण एवं मरम्मत इकाई में हुआ, जहां मरम्मत कार्य के दौरान कथित तौर पर सिलेंडर फट गया। दिल्ली अग्निशमन सेवा के अधिकारी ने बताया कि झुलसे लोगों की पहचान तीन भाइयों साकिब



(7), अब्बास (9) और राजा (3) के अलावा अरशद (22) के रूप में हुई। तीनों बच्चे अफसर नामक व्यक्ति के पुत्र हैं। पुलिस ने कहा कि साकिब 90 प्रतिशत, अब्बास और राजा 85 प्रतिशत तथा अरशद 70 प्रतिशत तक झुलस गया है। अधिकारी ने कहा कि घटना के समय अरशद गोदाम के अंदर काम कर रहा था। विस्फोट की सूचना मिलने पर दमकल की दो गाड़ियां मौके पर भेजी गईं। उन्होंने कहा, प्रारंभिक जांच से पता चला है कि चार मंजिला आवासीय इमारत के भूतल पर एक दुकान में सोपानजी सिलेंडर रखे जा रहे थे और उनकी मरम्मत की जा रही थी। मरम्मत कार्य के दौरान एक सिलेंडर कथित तौर पर फट गया, जिससे जोरदार विस्फोट हुआ। पुलिस को विशेप सत्र बुलाना चाहिए, जिसमें ऑपरेशन सिंदूर से जुड़े बावजूद पीएम मोदी पाकिस्तान से कश्मीर में खेल रहे तीन बच्चों पर जा गिरा।

‘देखते रहिए, POK के टुकड़े होने वाले हैं’

तेलंगाना सीएम के बयान पर बृजभूषण शरण सिंह का जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को लेकर पूर्व सांसद और भारतीय कुश्ती महासंघ के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा है कि देखते रहित पीओके के टुकड़े होने वाले हैं। इसके साथ ही उन्होंने तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी को कारारा जवाब दिया है। रेवंत रेड्डी ने कहा था कि देश को राहुल गांधी के नेतृत्व की जरूरत है। इसके साथ ही उन्होंने दावा किया था कि अगर राहुल गांधी देश के प्रधानमंत्री होते तो आज पीओके भारत का हिस्सा होता। रेवंत रेड्डी को जवाब देते हुए बृजभूषण शरण सिंह ने कहा -पीओके किसने दिया? तुष्टिकरण की राजनीति किसने शुरू की? किसके शासन में इस देश का बंटवारा हुआ? कांग्रेस के शासन में। कांग्रेस पीओके वापस नहीं ले सकती। भाजपा पीओके वापस लेगी। देखते रहिए, पीओके के टुकड़े होने वाले हैं।-

राहुल गांधी के प्रधानमंत्री बनने के सवाल पर उन्होंने कहा -राहुल गांधी कभी इस देश के प्रधानमंत्री नहीं बन सकते। क्योंकि



उनका विजन अभी तक स्पष्ट नहीं है। वह टुकटुकती हैं। उनकी विचारधारा टुकड़े-टुकड़े गंग से मिलती है। वह पाकिस्तान को खुश करने के लिए बयान देते हैं। अगर राहुल गांधी प्रधानमंत्री बन भी गए तो वह देश का बंटवारा हुआ? कांग्रेस को बेच दो।-

निश्चय रूप से इस देश को बेच दो।-

28 मई को हैदराबाद में रेवंत रेड्डी ने कहा था कि पीएम मोदी को यह बताना चाहिए कि पाकिस्तान ने भारत के कितने राफेल मार गिराए। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि 140 करोड़ भारतीयों की इच्छा के बावजूद पीएम मोदी पाकिस्तान से कश्मीर

नहीं ले सके। वह बलूचिस्तान को पाकिस्तान से अलग नहीं कर सके। इंदिरा गांधी का उदाहरण देते हुए रेड्डी ने कहा था कि तब भी अमेरिका ने दबाव बनाया था, लेकिन इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान के दो टुकड़े करने के बाद ही दम लिया। रेवंत रेड्डी के अलावा भी कांग्रेस और विपक्ष के कई अन्य नेताओं ने संसद के विशेष सत्र की मांग की है। मल्लिकार्जुन खरगे ने भी कहा था कि सरकार को विशेष सत्र बुलाना चाहिए, जिसमें ऑपरेशन सिंदूर से जुड़े सवाल पूछे जा सकें।

विचार

दुग्धशाला की शक्ति का परिचायक है आत्मनिर्भरता

दूध में कैल्शियम, मैग्नीशियम, जिंक, फास्फोरस, आर्थोडीन, आयरन, पोटैशियम, फोलेट्स, विटामिन ए, विटामिन डी, राइबोफ्लेविन, विटामिन बी-12, प्रोटीन आदि मौजूद होते हैं। गाय के वसा रहित दूध (स्किम्ड मिल्क) में कोलेस्ट्रॉल 2-5 मिलीग्राम प्रति 100 मिलीलीटर होता है। पूर्ण वसा (फुल क्रीम) वाले दूध में कोलेस्ट्रॉल 10-15 मिलीग्राम प्रति 100 मिलीलीटर होता है। आंकड़ों के अनुसार एक स्वस्थ व्यक्ति 300 मिलीग्राम कोलेस्ट्रॉल प्रतिदिन ले सकता है। अतएव दूध पीने से हृदयघात होने की संभावना नगण्य होती है। दूध में मुख्यतः केसिन और व्हेय नामक दो प्रोटीन पाए जाते हैं। दूध में प्रोटीन का 80 प्रतिशत हिस्सा केसिन के रूप में होता है और बाकी 20 प्रतिशत हिस्सा व्हे का होता है। दूध में व्यास केसिन प्रोटीन, कैल्शियम और फॉस्फेट के साथ मिलकर छोटे छोटे कण बनाते हैं जिन्हें मिसेल्स कहा जाता है। जब प्रकाश इन मिसेल्स से टकराता है तो यह प्रकाश अपरिवर्तित होकर फैल जाता है। दूध में पाए जाने वाला वसा के कण (फैट ग्लोबुल्स) भी प्रकाश के प्रकीर्णन का कारण बनते हैं। अतएव दूध का रंग सफेद दिखाई देता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस दूध में जितना ज्यादा वसा (फैट) होगा उसका रंग उतना ही सफेद दिखाई देगा। गाय के दूध में भैंस के दूध की अपेक्षा वसा (फैट) कम होता है और केसिन नामक प्रोटीन भी कम होता है। इसलिए गाय का दूध हल्का पीला दिखाई देता है। दूध में कैरोटीन और कैसिन नामक दो वर्णक (पिगमेंट) होते हैं जो उसके रंग को प्रभावित करते हैं। अतएव कैरोटीन की वजह से गाय के दूध में हल्का पीला रंग होता है, जबकि कैसिन की वजह से दूध का रंग सफेद होता है। भैंस के दूध में कैरोटीन कम होता है और फैट ज्यादा। जबकि गाय के दूध में कैरोटीन ज्यादा और फैट अपेक्षाकृत कम होता है। अतएव हम कह सकते हैं कि दूध एक अपारदर्शी, सफेद तरल उत्पाद है।

डेयरी शब्द को दुग्ध उद्योग से जोड़ कर देख सकते हैं। दूध को विभिन्न डेरी उत्पादों में परिवर्तन के लिए प्रसंस्करण किया जाता है। दूध के विभिन्न उप उत्पाद भी होते हैं जिन्हे तकनीकी भाषा में मिल्क बाई प्रोडक्ट (दूध के उप उत्पाद) भी कहा जाता है। डेयरी उत्पाद में दूध प्राथमिक घटक के रूप में प्रयोग होता है। जैसे की दूध, दही, पनीर, आइसक्रीम। डेयरी उप उत्पादों में व्हेय, छाछ, स्किम मिल्क, घी के अवशेष (घी रेजिड्यू) आदि आते हैं। दूधऔर डेयरी (दुग्धशाला) का सम्बन्ध बगिया और माली जैसा है। जिस प्रकार एक माली अपनी बगिया को सींचता और सम्हालता है। उसी प्रकार एक माली रूपी डेयरी (दुग्धशाला), बगियारूपी दूध को सम्हालता और संरक्षित करता है। डेयरी (दुग्धशालाएँ) दूध की सुंदरता और उनकी दिव्यता का द्योतक है। दूध का रखरखाव और उसको ताजा बनाए रखने की जिम्मेदारी डेयरी (दुग्धशाला) की होती है। जिसको तकनीकी भाषा में शैल्फ लाइफ ऑफ मिल्क कहा जाता है। अर्थात दूध की पोषकता को लम्बे समय तक बनाए रखना। पोषकता का सम्बन्ध शुद्धता से होना चाहिए। शुद्ध दूध ही एक स्वस्थ शरीर का परिचायक है। डेयरी उद्योगों (दुग्धशालाओं) के लिए शुद्धता ही प्राथमिकता होनी चाहिए। अधिकांश डेयरी उद्योग (दुग्धशालाएँ) शुद्धता का ख्याल रखते हैं और शुद्ध दूध को ही जन जन तक पहुँचाते हैं।

रक्षा में आत्मनिर्भरता के बढ़ते कदमों से बढ़ती सैन्य-ताकत

ऑपरेशन सिंदूर की शानदार कामयाबी, पाकिस्तान को करारी चोट पहुंचाने, विश्व को भारत की सैन्य ताकत दिखाने और अपने सैनिकों के अद्भुत पराक्रम के प्रदर्शन की गौरवपूर्ण स्थितियों के बीच एक बड़ी खुशखबरी है कि भारत सरकार ने पांचवीं पीढ़ी के स्वदेशी लड़ाकू विमान (एडवांस्ड मीडियम कॉबैट एयरक्राफ्ट यानी एएमसीए) के प्रोडशन मॉडल को मंजूरी देते हुए इस परियोजना पर आगे बढ़ने को हरी झंडी दिखा दी है। निश्चित ही इस फैसले से दुनिया की महाशक्तियां चौंकी हैं, वहीं यह भारतवासियों के लिये एक नई आशा एवं संभावनाभरी खुशखबरी है। योंकि दुनिया की महाशक्ति बनने के लिये सैन्य साजो-सामान की दृष्टि से आत्म निर्भर होना प्रथम प्राथमिकता है।



दुनिया पर वर्चस्व स्थापित करने का यह सबसे बड़ा आधार है कि हम सैन्य साजो सामान में स्वावलम्बी ही नहीं, निर्यातक बने। क्योंकि उन्हें दूसरे देशों से खरीदने में विदेशी पूंजी का व्यय होने के साथ कई तरह के दबावों का भी सामना करना पड़ता है। दूसरे देश अपनी शर्तों पर ये हमें उपलब्ध कराते हैं, अर्थ का व्यय भी स्वदेशी उत्पादन की तुलना में बहुत ज्यादा करना पड़ता है। जबसे रक्षा सामग्री के निर्माण में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाई गई है, तब से भारत का रक्षा निर्यात तेजी से बढ़ा है। रक्षा मंत्रालय के ताजा फैसले के बाद सरकारी और निजी क्षेत्र की कंपनियों के शेरय जिस तरह उछले, उससे यही पता चलता है कि देश रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने के लिए नई दिशाओं को उद्घाटित कर रहा है। निश्चित ही पांचवीं पीढ़ी के उन्नत लड़ाकू विमानों का देश में ही निर्माण करने और उसमें निजी क्षेत्र का सहयोग लेने की रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की घोषणा एक ऐसा फैसला है, जो दूरगामी एवं देशहित का सराहनीय कदम है। ऐसे फैसलों में बिना विलम्ब के प्रोत्साहन एवं सहयोग होना चाहिए। हमें निश्चित करना चाहिए कि आधुनिक लड़ाकू विमानों के निर्माण तय समय में हो, इसके

लिए हरसंभव उपाय किए जाने चाहिए। ऐसे फैसलों से भारत की ताकत बढ़ती है, दुनिया की अधीनता कमतर होती है। गौरतलब है, अभी तक अमेरिका, रूस और चीन ने ही पांचवीं पीढ़ी के स्वदेशी लड़ाकू विमान बनाने में सफलता हासिल की है। इस योजना के जरिये दुनिया को यह संदेश देना है कि भारत अब पांचवीं पीढ़ी का लड़ाकू विमान खरीदने की बजाय खुद बनाने का काम करेगा।

इस स्वदेशी विमान के डिजाइन और विकास के लिए सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति ने हाल ही में पन्द्रह हजार करोड़ रुपये की राशि मंजूर की थी। अब रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एजेंसी (एडीए) इस प्रोजेक्ट का नेतृत्व करेगी और डीआरडीओ के मुखिया की मार्गें, तो आगे एक दशक में यह लड़ाकू विमान भारतीय वायु सेना के बेड़े का हिस्सा होगा। निस्संदेह, हमारे रक्षा वैज्ञानिकों की सराहना की जानी चाहिए कि उनके अथक परिश्रम, तकनीकी कौशल और मेधा के कारण देश जल्द ही सुरक्षा साजो-सामान के मामले में भी आत्म-निर्भर बन जाएगा। इन स्थितियों के लिये जहां रक्षामंत्री

राजनाथ सिंह की सराहना होनी चाहिए वही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व का लोहा मानना चाहिए।

मौजूदा समय में भारत लड़ाकू विमान के मामले में दूसरे देशों पर निर्भर है। सरकार ने इस दिशा में भी आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए बड़ा कदम उठाया है। इस फैसले से घरेलू एयरोस्पेस इंडस्ट्री को सशक्त बनाने में मदद मिलेगी। एएमसीए का विकास भारतीय वायु सेना की लड़ाकू क्षमताओं को मजबूत करने और देश की रक्षा को बढ़ावा देने में मौल का पथर साबित होगा। पड़ोसी देशों की हरकतों, युद्ध की संभावनाओं एवं षडयंत्रों को देखते हुए आने वाले समय में होने वाले युद्ध में वायुसेना की क्षमता और तकनीक को अधिक सशक्त बनाने की अपेक्षा है। भारत हमेशा से एक शक्तिकामी मुल्क रहा है, मगर अपनी सरहदों व विशाल आबादी की सुरक्षा के लिए वह दूसरे देशों के हथियारों या सुरक्षा उपकरणों पर पूरी तरह निर्भर नहीं रह सकता। विदेशी लड़ाकू विमानों या हथियारों की खरीद में उनके तकनीकी हस्तंतरण को लेकर कई तरह की पेचीदगियां पेश आती हैं। कई देश उन्नत रक्षा उपकरण तो दे देते हैं, लेकिन उनकी तकनीक नहीं देते या फिर उनके कलपुर्जे देने में देरी करते हैं। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि पर्याप्त संख्या में तेजस लड़ाकू विमान बनाने में इसलिए विलंब रहा है, क्योंकि अमेरिका उनके लिए इंजन देने में आनाकानी कर रहा है। इसलिए एचएएल, डीआरडीओ की स्थापना की जरूरत मससूस की गई थी और आज इनके बनाए हथियार न सिर्फ हमारी सैन्य शक्ति का हिस्सा बन रहे हैं, बल्कि इस वजह से हमारा 20 फीसदी से भी अधिक सैन्य आयात कम हुआ है। आज हम अपने स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस दुनिया को बेचने की स्थिति में हैं।

मौजूदा समय में लड़ाकू विमान के लिए भारत अमेरिका और पश्चिमी देशों और रूस पर निर्भर है। देश में लड़ाकू विमानों की कमी भी है। ऐसे में सरकार स्वदेशी निर्मित आधुनिक लड़ाकू विमान के निर्माण को बढ़ावा देने की दिशा में कदम उठाकर सुझबुझ एवं दूरगामी सोच का परिचय दिया है। आज जब युद्ध के तौर-तरीके बदल रहे हैं, तब भारत को हर तरह की रक्षा सामग्री स्वदेश में ही बनाने में इसलिए सक्षम होना होगा, क्योंकि ऐसा करके ही वह सच्चे अर्थों में महाशक्ति बन सकता है। प्रारंभ में विदेशी कंपनियों का सहयोग लेने में हर्ज नहीं, क्योंकि ऐसा करके ही तेजी के साथ उन्नत रक्षा सामग्री का निर्माण किया जा सकता है। भारत आधुनिक रक्षा उपकरण एवं तकनीक का निर्माण करने में सक्षम है, इसे आपरेशन सिंदूर ने साबित भी कर दिया। हमारे रक्षा उपकरणों और तकनीक ने जिस तरह तुर्किये के ड्रोन की हवा निकालने के साथ चीनी एयर डिफेंस की पोल खोल दी, उसे विश्व भर के रक्षा विशेषज्ञ भी मान रहे हैं। रूस के सहयोग से बनी ब्रह्मोस मिसाइल और स्वदेशी तकनीक पर आधारित आकाश ने सिद्ध किया कि हमारे रक्षा विज्ञानी किसी से कम नहीं। उन्हें भरपूर प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। भारत की रक्षा सेना दुनिया में सबसे शक्तिशाली और सम्मानित सेनाओं में से एक है, जो अपने आकार, ताकत और उन्नत तकनीक के साथ वैश्विक मंच पर धूम मचा रही है। चाहे सीमाओं पर गश्त करना हो, आसमान की सुरक्षा करनी हो या विशाल हिंद महासागर को सुरक्षित रखना हो, भारत की सेना एक ऐसी ताकत है जिसका लोहा माना जाना चाहिए। भारत का लक्ष्य सिर्फ वैश्विक सैन्य शक्तियों के साथ बने रहनाभर नहीं है—यह उनके साथ है बल्कि अब उससे आगे भी आना है। किसी भी युद्ध या संघर्ष में वायु सेना की भूमिका निर्णायक हो चली है। हमारा-इजरायल जंग हो या रूस-यूक्रेन लड़ाई, इस तथ्य को पूरी दुनिया स्वीकारती है।

ऑपरेशन सिंदूर के जरिये हमारी वायु सेना ने भी दिखा दिया है कि किस सटीकता से शत्रुओं के लक्ष्य को मटियामेंट करने में वह सक्षम है। ऐसे में विदेशी वायु सेना की चुनौतियों पर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है। वर्तमान में, भारत दुनिया में चौथे स्थान पर है, जो केवल संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन से पीछे है। यह स्थान इसके उन्नत विमान, बेहतर प्रशिक्षण और रणनीतिक महत्व के संयोजन के कारण अर्जित किया गया है। बहुमुखी राफेल जेट से लेकर शक्तिशाली सुखोई अपने रास्ते में आने वाली किसी भी चुनौती से निपटने के लिए सुसज्जित है। निश्चित ही भारत ने एक ऐसा सैन्य बल बनाया है जो ध्यान आकर्षित करता है, जिसमें विशाल जनशक्ति, अत्याधुनिक तकनीक और गहन रणनीतिक फोकस का संतुलन है। यह अब सिर्फ एक क्षेत्रीय खिलाड़ी नहीं है; भारत खुद को एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर रहा है। भारतीय वायुसेना के पायलट दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पायलटों में से हैं, जो न केवल हार्डवेयर बल्कि मानवीय तत्व के कारण हवाई प्रभुत्व बनाते हैं।

एमएसपी घोषणा सकारात्मक पहल तो चाकचोबंद खरीद व्यवस्था भी जरूरी

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

केन्द्र सरकार द्वारा खरीफ फसलों की न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा खरीफ की बुवाई से पहले ही करने को किसानों के हित में सकारात्मक पहल के रुप में देखा जाना चाहिए। इसमें कोई दो राय नहीं कि नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा एक तो समय पूर्व समर्थन मूल्यों की घोषणा की जा रही है वहीं दूसरी ओर भविष्य की रणनीति के तहत आवश्यकतानुसार उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करने की दिशा में भी कदम बढ़ाये जा रहे हैं। सरकार द्वारा श्री अन्न को जहां अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने का सफल प्रयास किया गया है वहीं देश को दलहन और तिलहन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं। 2027 तक दलहन के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लक्ष्य के साथ सरकार आगे बढ़ रही है तो तिलहन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रयास किये जा रहे हैं। सरकार की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि आगामी खरीफ के लिए घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्यों में रामतिल के भावों में सर्वाधिक 820 रु. की बढ़ोतरी करते हुए 9537 रु. प्रति क्विंटल एमएसपी घोषित की गई है। इसी तरह से तिल की एमएसपी में 579 रु., सोयाबीन में 436 रु., सुरजमुखी में 441 रु. और मूंगफली की एमएसपी में 480 रु. की बढ़ोतरी की गई है। ठीक इसी तरह से उड़द में 400 रु. तो मूंग की एमएसपी में 86 रु. और अरहर की एमएसपी में 450 रु. की बढ़ोतरी की गई है। इसी तरह से बाजरा, रागी, ज्वार, कपास, धान आदि अन्य खरीफ फसलों की एमएसपी दरों में बढ़ोतरी की गई है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि जहां तक एमएसपी दरों की घोषणा की बात है सरकार की ईच्छा शक्ति पर किसी तरह का संदेह नहीं किया जा सकता है।



मोदी सरकार के 2013-14 से 2025-26 तक के कार्यकाल की एमएसपी दरों में बढ़ोतरी निश्चित रुप से सकारात्मक दिशा में बढ़ता कदम माना जा सकता है। 2013-14 की तुलना में 226 प्रतिशत की बढ़ोतरी रागी के समर्थन मूल्य में की गई है। बाजरा में 122 प्रतिशत तो ज्वार की एमएसपी में 147 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हो चुकी है। दलहन और तिलहन की खरीफ फसलों में भी 82 प्रतिशत से रामतिल में 172 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है। सरकार का यह भी दावा है कि एमएसपी घोषणा करने से पहले सरकार ने फसलों की लागत के सभी पहलुओं को ध्यान में रखा है और लागत से कहीं अधिक एमएसपी दर जारी की गई है।

किसान आंदोलनों के दौरान सबसे अहम मुद्दा एमएसपी को लेकर ही रहता आया है। सरकार एक ओर एमएसपी दरों में बढ़ोतरी और एमएसपी पर खरीद का दावा कर रही है और यह दावा एक हद तक सही भी है पर दूसरी ओर किसान नेताओं का यह कहना रहा है कि सरकार एमएसपी दरों की घोषणा के साथ ही एमएसपी पर खरीद की व्यवस्था भी सुनिश्चित करें। केन्द्र सरकार की ओर से एफसीआई और नेफेड एमएसपी खरीद के लिए नोडल संस्था है तो कपास की खरीद सीसीआई द्वारा की जाती है। राज्यों में एफसीआई व नेफेड के लिए खरीद सुविधा में राज्यों की सहकारी विपणन संस्थाएं प्रमुखता से सहभागी रहती है। खरीद की

व्यवस्था को भी पारदर्शी और ऑनलाईन कर दिया गया है और रजिस्ट्रेशन से लेकर सीधे खातों में भुगतान तक की व्यवस्था ऑनलाईन की गई है। पर कहीं ना कही व्यवस्था में झोल अवश्य है। इसको यों समझा जा सकता है कि एक समय था तब सरकारी खरीद शुरू होने की घोषणा और लगभग 10 से 15 प्रतिशत उत्पादन की खरीद होते होते मण्डियों में भाव एमएसपी के आसपास आ जाते थे। इसका परिणाम यह होता था कि ना तो किसानों की नाराजगी रहती थी और ना ही अन्य कोई समस्या आती थी। पर आज खरीद व्यवस्था के पारदर्शी होने के बावजूद किसान अपने आप को ठगा महसूस करता है।

इसका एक बड़ा कारण तो यह है कि बाजरा आदि की खरीद तो सरकार द्वारा किसी ना किसी बहाने टाली ही जाती है क्योंकि बाजरे की खरीद के बाद रखरखाव को लेकर संकट रहता है और सरकार का मानना है कि उसे नुकसान अधिक होता है क्योंकि खरीदा हुआ बाजरा जल्दी खराब हो जाता है। वहीं दूसरी ओर व्यवस्था को लाख पारदर्शी और जवाबदेह बनाने के बावजूद बिचौलियों इस व्यवस्था का भरपूर लाभ उठाते देखे जा रहे हैं। कहीं कहीं तो खरीद केन्द्रों पर जितनी मात्रा में खरीदे हो रही है वह उस क्षेत्र में उत्पादित पैदावार से भी अधिक हो जाती है। इसके साथ ही किसानों की तात्कालीक आवश्यकताओं के चलते आड़तियों पर निर्भरता के कारण भी किसान का लाभ आड़तियां ले जाता है। हालांकि यह व्यवस्था का ही दोष माना जा सकता है। होना तो यह चाहिए कि जिन फसलों के समर्थन मूल्य की घोषणा सरकार द्वारा की जाती है उन फसलों के तैयार होकर मण्डियों में आने से पहले ही सरकार को खरीद की आवश्यक तैयारियां पूरी कर लेनी

चाहिए। खरीद के लिए खरीद केन्द्र की स्थापना, तुलाई ढुलाई की व्यवस्था, बारदाना, ट्रॉसपोर्टेशन, भण्डारण, भुगतान की आवश्यक व्यवस्था, बैंकों से भुगतान आदि की व्यवस्था, खरीद केन्द्रों पर पीने के लिए पानी आदि की व्यवस्था सहित आवश्यक सभी तैयारियां सुनिश्चित हो जानी चाहिए। इसके साथ ही आज सरकार के पास उत्पादन के सारे डेटा उपलब्ध होते हैं ऐसे में संभावित खरीद का आकलन भी सुनिश्चित हो जाना चाहिए। सरकार द्वारा पूर्व में ही यह घोषणा कि इतनी मात्रा में ही खरीद की जाएगी तो इससे राजनीति के अधिक अवसर उत्पन्न हो जाते हैं और अनावश्यक भ्रम के हालात बन जाते हैं। ऐसे हालात से बचा जाना जरूरी हो जाता है।

न्यूनतम समर्थन मूल्य को लेकर सरकार को खरीफ श्री अन्न खासतौर से बाजरा आदि की खरीद की भी स्पष्ट नीति बनानी होगी अन्यथा श्री अन्न खासतौर से बाजरा को हम अंतरराष्ट्रीय प्लेटफार्म दिला रहे हैं वह जल्दी ही प्रभावित हो सकती है। सरकार को कोई ना कोई ऐसी स्पष्ट रणनीति बनानी होगी जिससे बाजरा उत्पादक किसान एमएसपी दर घोषित होने के बावजूद अपने आपकों ठगा महसूस ना कर सकें। इसके लिए बाजार ताकतों को भी सक्रिय करना होगा ताकि बाजार में श्रीअन्न बाजरा आदि की मांग बढ़े और सरकारी खरीद ना होने की स्थिति में भी एमएसपी दर तो कम से कम उत्पादक किसान को बाजार में मिल सके। इसके लिए सरकार को इच्छाशक्ति के साथ आगे आना होगा। अब श्रीअन्न को प्रोत्साहित करने का हमारा दायित्व भी हो जाता है ऐसे में इस और अधिक गंभीरता से ध्यान देना होगा क्योंकि अभी तो बुवाई से फसल पकने तक का तीन से चार माह का समय सरकार के पास होगा।

मनेंद्रगढ़ में 4 साल से बंदबायो डायवर्सिटी पार्क

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। छत्तीसगढ़ के मनेंद्रगढ़ वन मंडल में अमृतधारा जलप्रपात के पास 2 करोड़ रुपए की लागत से बायोडायवर्सिटी पार्क का निर्माण किया था। यह पार्क वन परिक्षेत्र बिहारपुर के अंतर्गत 300 एकड़ में फैला है। पार्क में 2 वाच टावर और एक हॉल बनाया गया है। लेकिन 4 साल बीत जाने के बाद भी यह पर्यटकों के लिए बंद पड़ा है।

पार्क के मुख्य द्वार पर न तो कोई जागरूकता बोर्ड लगा है और न ही सुरक्षा की कोई व्यवस्था की गई है। अमृतधारा जलप्रपात रोजाना सैकड़ों पर्यटकों को आकर्षित करता है। यहां दूर-दराज और अन्य राज्यों से लोग प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने आते हैं। बायोडायवर्सिटी पार्क का निर्माण पर्यटकों को प्रकृति के करीब लाने के उद्देश्य से किया गया था। हालांकि, निर्माण के 4 वर्ष बाद भी पार्क का ताला नहीं खुला है। इससे न केवल करोड़ों रुपए का सरकारी निवेश बेकार पड़ा है, बल्कि पर्यटक भी इसका लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।

कांग्रेस पर स्वास्थ्य मंत्री का पलटवार, मनेंद्रगढ़ में विकास कार्य जारी



मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने चिरमिरी में मीडिया से बातचीत की। उन्होंने कहा कि मनेंद्रगढ़ में विकास कार्य तेजी से हो रहे हैं। जिला अस्पताल का निर्माण चल रहा है। गोंडवाना मरीन फासिल्स पार्क भी बन रहा है। मंत्री ने कहा कि एक तरफ स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार हो रहा है। दूसरी ओर पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है। समुद्री जीवाश्म के अवशेषों को पार्क के रूप में विकसित किया जा रहा है। शोधार्थियों के लिए यह एक महत्वपूर्ण केंद्र बनेगा। जायसवाल ने कांग्रेस पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि विपक्षी दल को विकास

छापों के खिलाफ नगर बंद का व्यापक असर, सरगुजा में सुबह से बंद रही दुकानें

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा (एजेंसी)। अबिकापुर के व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर जीएसटी छापे के खिलाफ रविवार को व्यापारी संघों ने नगर बंद रखकर रैली निकाली। जिसका व्यापक असर दिखा। सुबह से ही दुकानें बंद रही। कलेक्टोरेट चौकी पर व्यापारी संघों ने लगातार जीएसटी छापे और अवैध वसूली पर रोक लगाने की मांग की। कांग्रेस ने भी बंद को समर्थन दिया है। दोपहर बाद भी शहर की दुकानें बंद हैं।

दरअसल, सरगुजा में लगातार व्यापारियों पर जीएसटी के छापों के खिलाफ शनिवार को व्यापारी संगठनों ने मोर्चा खोला। अबिकापुर के रिंगरोड, बिलासपुर चौक पर लक्ष्मी ट्रेडर्स में शुक्रवार से चल रहे जीएसटी छापे का विरोध करते हुए व्यापारियों ने नारेबाजी की। अग्रसेन भवन में मीटिंग के बाद व्यापारियों ने रैली निकालकर रविवार को नगर बंद रखा।

व्यापारी संघों की रैली नगर के मुख्यमार्गों से होते हुए कलेक्टोरेट चौक पहुंची। यहां व्यापारी संगठनों



ने तहसीलदार उमेश बाज को मुख्यमंत्री के नाम आवेदन दिया। ज्ञापन में व्यापारी संगठनों ने जीएसटी छापे के नाम पर व्यापारियों से अवैध उगाही का आरोप लगाया है।व्यापारी संगठनों ने आरोप लगाया है कि, जीएसटी चोरी का आरोप लगाकर फाइन का डर दिखाकर लाखों रुपए की अवैध उगाही की जा रही है।

कुछ व्यापारियों को टारगेट कर कार्रवाई की जा रही है। व्यापारी संगठनों ने व्यापारियों को जबरिया परेशान न करने और अवैध उगाही पर रोक लगाने की मांग की है। व्यापारी संगठनों के बंद का

रविवार को साप्ताहिक बाजार के दिन भी व्यापक असर दिखा। कांग्रेस ने व्यापारी संगठनों के बंद को अपना समर्थन दिया है। व्यापारी संगठनों के आह्वान पर सभी दुकानें सुबह से ही बंद रहीं। दोपहर बाद तक दुकानें नहीं खुलीं।

स्टेट जीएसटी ने कहा-लाखों की टैक्स चोरी सरगुजा में एक महीने में दर्जनों की संख्या में कार्रवाई स्टेट जीएसटी की टीम ने की है, लेकिन शनिवार को विवाद के बाद स्टेट जीएसटी टीम ने विज्ञप्ति जारी की है। इसमें बताया गया है कि लक्ष्मी टेंडर्स में 30 मई और 31 मई को



मेसर्स लक्ष्मी ट्रेडर्स, अबिकापुर में जांच में पाया गया कि वर्ष 2017-18 से वर्ष 2024-25 तक कुल टर्न ओव्हर लगभग 96 करोड़ से अधिक है लेकिन उस पर कर का नगद भुगतान नगण्य किया गया है। साल 2023-24 में माल की खरीदी 11 करोड़ की गई, लेकिन माल की सप्लाई मात्र 7 करोड़ की ही की गई है। व्यवसायी ने अपनी गलती/ त्रुटि स्वीकार करते हुए स्वैच्छिक रूप से 17.55 लाख टैक्स भुगतान कर दिया है। उस व्यवसायी पर स्टेट जीएसटी विभाग ने पहले कोई कार्रवाई नहीं की।

टैक्स चोरी

स्टेट जीएसटी टीम ने मेसर्स बंशल ट्रेडिंग कार्पोरेशन, अबिकापुर में 29 मई को जांच की कार्रवाई की गई है। साल 2017-18 से साल 2024-25 तक कुल टर्न ओव्हर लगभग 158 करोड़ से अधिक है। लेकिन उस पर कर का नगद भुगतान शून्य किया गया है। व्यवसायी ने अपनी गलती मानते हुए स्वैच्छिक रूप से 40 लाख कर भुगतान करने की मंशा जाहिर की। लेकिन जीएसटी विभाग के अधिकारियों ने व्यवसायी से लेखा पुस्तक और अन्य दस्तावेज पेश करने की मांग की है।

मनेंद्रगढ़ कप क्रिकेट टूर्नामेंट का समापन, मिनी स्टेडियम बनाने की घोषणा



मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मनेंद्रगढ़ में स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने क्रिकेट मैदान में खुद बल्लेबाजी कर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में एक और भरतपुर-सोनहत की विधायक रेणुका सिंह एक मासूम बच्ची को पिन काल पर उसके जन्मदिन समारोह में शामिल हुईं, तो दूसरी ओर मनेंद्रगढ़ में स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने क्रिकेट मैदान में खुद बल्लेबाजी कर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

मनेंद्रगढ़ प्रेसिडेंट क्लब द्वारा आयोजित फ्लड लाइट टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट मनेंद्रगढ़ कप 2025 का समापन हुआ। मुख्य अतिथि स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करने के लिए बल्लेबाजी की। वाई क्रमांक 1 और 4 के बीच फाइनल मैच में मंत्री जायसवाल की बल्लेबाजी के दौरान

मंत्री ने मिनी स्टेडियम बनाने की घोषणा की

प्रेसीडेंट क्लब के अध्यक्ष अधिवक्ता आशीष सिंह की मांग पर मंत्री ने हाई स्कूल मैदान को मिनी स्टेडियम बनाने की घोषणा की। उन्होंने नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिमा सरजू यादव को इस्टीमेट बनवाकर भेजने के निर्देश दिए। कार्यक्रम में नगरपालिका अध्यक्ष प्रतिमा सरजू यादव, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष लखनलाल श्रीवास्तव, पूर्व नेता प्रतिपक्ष सरजू यादव सहित अन्य जनप्रतिनिधि, पदाधिकारी, कार्यकर्ता और खिलाड़ी उपस्थित रहे।

दो बाइकों की आमने-सामने भिड़ंत, देवर-भाभी सहित तीन की मौत



मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। अबिकापुर-बनारस मुख्य मार्ग में बिहार शम दो बाइकों में हुई सीधी भिड़त में देवर-भाभी सहित तीन की मौत हो गई, वहीं एक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसा गांधीनगर थाना क्षेत्र के चटिरमा पुल के पास हुआ। मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी को अबिकापुर मेडिकल कॉलेज भेजा, जहां तीन लोगों को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। घायल का इलाज जारी है।

हदसे की सूचना पर गांधीनगर पुलिस मौके पर पहुंची। गंभीर रूप से घायल चारों को अबिकापुर मेडिकल कॉलेज हास्पिटल भेजा गया। चिकित्सकों ने जांच के बाद देवर-भाभी करन यादव और रिया यादव सहित बाइक सवार नाबालिग देव मंडल (16 वर्ष) को मृत घोषित कर दिया। देव मंडल मूलतः ओडिशा के संबलपुर का निवासी था और अपने मामा के घर आया था। घायल नाबालिग की शिनाख्त नहीं हो पाई है।

दोनों बाइकों की भिड़ंत इतनी जबरदस्त थी कि चारों बाइक सवार उछलकर सड़क पर गिर गए। हादसे में तीनों मृतकों के सिर और चेहरे में गंभीर चोट आई। किसी ने भी हेलमेट नहीं पहना था। हादसे का कारण तेज रफ्तार बताया गया है। घटना की सूचना पर मृतकों के परिजन मेडिकल कॉलेज हास्पिटल पहुंच गए हैं। सभी मृतकों के शवों को मोचरी में रखवा दिया गया है। सोमवार को शवों को पोस्टमॉर्टम कराया जाएगा।

रीवा की खबरें

ऑटो सवार दंपति से लूट, 5 तोला सोने के जेवर छीनकर भागे बदमाश



मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में रेवांचल एक्सप्रेस ट्रेन से उतरकर घर लौट रही महिला के साथ बाइक सवार बदमाशों ने लूट की वारदात को अंजाम दिया। बदमाश 5 तोला सोने के जेवर और नगदी लेकर भाग गए। पीड़ित परिवार ने पूरे मामले की शिकायत सिविल लाइन थाने में दर्ज कराई है। जिसके बाद पुलिस बदमाशों की तलाश में जुट गई है। घटना के संबंध में पीड़ित रेखा अग्रवाल और सुशील अग्रवाल ने बताया कि आज हम भोपाल के रानी कमलापति स्टेशन से रेवांचल एक्सप्रेस में सवार होकर रीवा पहुंचे। घर तक आने के लिए हम एक ऑटो में सवार हुए। हमारे साथ हमारी बेटी भी थी। जैसे ही ऑटो ढेकहा तिराहे के पास पहुंचा। दो बाइक सवार बदमाश बैग छीनकर पलक झपकते ही फरार हो गए। लूट गए बैग में लाखों का कीमती सामान था। जिसमें 5 तोला सोना समेत नगदी शामिल है। सिविल लाइन थाना प्रभारी कमलेश साहू ने बताया कि घटना के संबंध में थाने पहुंचे पति पत्नी ने शिकायत दर्ज कराई है। घटना स्थल के आसपास मौजूद सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं,बदमाशों की तलाश की जा रही है।

गहरी जुताई और खरपतवार नष्ट करने के लिए उपयोगी है रोटावेटर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार खेती है। खेती के आधुनिकीकरण के साथ इसका तेजी से यंत्रीकरण हो रहा है। अब खेतों की जुताई लगभग शत-प्रतिशत ट्रैक्टरों के माध्यम से होती है। ट्रैक्टर से संचालित कई कृषि उपकरण किसानों के लिए बहुत उपयोगी हैं। इस संबंध में उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने बताया कि ट्रैक्टर के माध्यम से चलने वाला रोटावेटर और रोटरी टिलर्स खेतों की गहरी जुताई और खरपतवार नष्ट करने के लिए बहुत उपयोगी हैं। रोटावेटर से किसान अपनी सुविधा और उपयोगिता के अनुसार जुताई की गहराई का निर्धारण कर सकते हैं। इसके उपयोग से सरवाई तथा अन्य खरपतवार छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटकर मिट्टी में मिल जाते हैं। बारिश के बाद इनसे मिट्टी के लिए बहुत उपयोगी हरी खाद तैयार होती है जिससे मिट्टी की उर्वरता और जलधारण क्षमता में वृद्धि होती है। धान की रोपाई के लिए खेत को समतल करने और पडलिंग के लिए भी रोटावेटर का उपयोग किया जा सकता है। रोटावेटर का उपयोग 35 हार्सपावर से 55 हार्सपावर तक के ट्रैक्टर में सबसे कारगर होता है। रोटावेटर से सामान्य रूप में तीन घण्टे में एक हेक्टेयर के खेत में जुताई का कार्य हो जाता है। बाजार में रोटावेटर के कई माडल उपलब्ध हैं। किसान अपनी सुविधा के अनुसार इनका उपयोग कर सकते हैं। कृषि विभाग द्वारा रोटावेटर के लिए अनुदान की भी सुविधा उपलब्ध है।

किसानों को ई कृषि यंत्र पोर्टल से है अनुदान की सुविधा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कृषि को उन्नत बनाने के लिए कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से किसानों को लाभान्वित किया जा रहा है। खेती से जुड़े उपकरणों की खरीद पर किसानों को उनकी पात्रता के अनुसार ई कृषि यंत्र पोर्टल के माध्यम से अनुदान की सुविधा दी जा रही है। ई कृषि यंत्र पोर्टल पर पंजीयन कराने के बाद किसान ट्रैक्टर, पावर टिलर सहित सभी तरह के शक्ति चालित एवं स्वचालित कृषि यंत्रों पर अनुदान का लाभ ले सकते हैं। पोर्टल के माध्यम से बिजली एवं डीजल से चलने वाले सिंचाई पंप, ड्रिप सिस्टम, स्प्रेकलर, रेनगन तथा सिंचाई पाइपलाइन के लिए भी अनुदान की भी व्यवस्था है। इस संबंध में उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने बताया कि ई कृषि यंत्र पोर्टल पर पंजीयन कराने के लिए किसान के युआईडीएआई आधार पंजीयन में अधिकृत फिंगर प्रिंट स्कैनर डिवाइस के माध्यम से पंजीयन की सुविधा दी गई है। आधार कार्ड और स्वयं की फोटो अपलोड करके भी किसान पंजीयन की सुविधा प्राप्त कर सकते हैं। पंजीयन के साथ-साथ किसान को अनुदान का लाभ लेने के लिए निर्धारित पत्र में घोषणा पत्र देना होगा। जिसमें इस बात का उल्लेख रहेगा कि गत वर्षों में निर्धारित अवधि में किसान को अनुदान का लाभ नहीं मिला है। पंजीयन होते ही किसान को कृषि सामग्री के लिए जिले और आसपास के क्षेत्र में उपलब्ध अधिकृत विक्रेताओं की सूची पोर्टल पर उपलब्ध हो जाएगी। किसान के पंजीकृत मोबाइल पर एएसएमएस के माध्यम से पंजीयन की जानकारी तथा विशेष कोड प्राप्त होगा। इस कोड के माध्यम से डीलर के यहाँ किसान का आवेदन पत्र खुलेगा। किसान पंजीयन का प्रिंट आउट और विक्रेताओं की सूची प्राप्त कर सकते हैं। इन अधिकृत विक्रेताओं में से किसान अपनी पसंद तथा कृषि उपकरण का मोलभाव करके विक्रेता का चुनाव कर सकते हैं। पंजीयन के बाद किसान को अधिकतम 10 दिन की समय सीमा में उपकरण खरीदना होगा। समय सीमा पूरी होने पर पंजीयन अपने आप निरस्त हो जाएगा। साथ ही किसान अगले 6 माह के लिए पंजीयन से अपात्र हो जाएगा। पोर्टल के माध्यम से किसान एक साल में केवल दो उपकरणों के लिए आवेदन कर सकता है। एक ही उपकरण को खरीदने का लाभ पुनः लेने के लिए पोर्टल में समय सीमा तय है। स्वचालित और शक्ति चालित पंप में पाँच साल तथा शेष सिंचाई पंप, ड्रिप सिस्टम, स्प्रेकलर, रेनगन तथा सिंचाई पाइप विद्युत एवं डीजल पंप में सात साल में एक बार खरीदने का लाभ मिलेगा। ट्रैक्टर से चलने वाले कृषि यंत्रों को खरीद के समय किसान को पास उपयुक्त हार्सपावर का ट्रैक्टर होना आवश्यक है। पोर्टल में आवेदन करने के बाद आगे आए लाभ उठाए के आधार पर सूची के अनुसार किसानों को अनुदान का लाभ दिया जाएगा।

ईकेवायसी में लापरवाही पर सेल्समैन निलंबित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासकीय उचित मूल्य दुकान अमाव के सेल्समैन जवाहरलाल नापित को तत्काल प्रभाव से निलंबित करने के आदेश दिये गये हैं। खाद्य सुरक्षा योजना के हिस्गाहियों की ईकेवायसी कराने में रुचि न लेने तथा लापरवाही बरतने पर यह कार्यवाही की गयी है। इस संबंध में आपूर्ति नियंत्रक कमलेश ताण्डेकर ने बताया कि निलंबन अवधि में श्री नापित का मुख्यालय सेवा सहकारी समिति अमाव रहेगा। खाद्यान वितरण एवं अन्य कार्यों के लिए उचित मूल्य दुकान अमाव का प्रभार सेल्समैन ओमप्रकाश मिश्रा उचित मूल्य बराखुर्द को दिया गया है।

सुप्रीम कोर्ट बोला- डांटना आत्महत्या के लिए उकसाना नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि किसी को डांटना उसे सुसाइड के लिए उकसाना नहीं माना जा सकता। इसके साथ ही कोर्ट ने मद्रास हाईकोर्ट के आदेश को खारिज कर दिया। जिसमें हॉस्टल वार्डन को आईपीसी की धारा 306 के तहत स्टूडेंट को सुसाइड के लिए उकसाने का दोषी माना था। जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह और जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा की बेंच ने कहा- कोई यह नहीं सोच भी नहीं सकता कि डांटने से ऐसी घटना हो सकती है। दरअसल, वार्डन ने एक स्टूडेंट की शिकायत पर एक अन्य स्टूडेंट को डांट लगाई थी। इसके बाद स्टूडेंट ने अपने कमरे में फांसी लगा ली थी। वार्डन का तर्क था कि उसने पैरेंट के तौर पर स्टूडेंट को डांटा था, जिससे वो आगे से गलती न करे। वार्डन ने कहा था कि उसके और सुसाइड करने वाले स्टूडेंट के बीच कोई निजी संबंध नहीं था।

भगवान जगन्नाथ के रथ में सुखोई जेट के टायर लगाए

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता इस्कॉन की फेमस भगवान जगन्नाथ रथयात्रा के रथ के पहियों को 48 साल बाद बदला गया है। इस बार रथ में रूसी सुखोई जेट के टायर लगाए जा रहे हैं। फाइटर जेट की टेकऑफ़ स्पीड 280 किमी/घंटा तक होती है। हालाँकि, रथ 1.4 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलेगा। इस्कॉन कोलकाता ने बताया कि पिछले कई सालों से रथ को चलाने में समस्या आ रही थी। आयोजक 15 सालों से नए टायर की तलाश में थे। बोइंग विमान के पुराने टायरों का इस्तेमाल किया जा था, लेकिन अब वे बाजार में मिलने मुश्किल हो रहे हैं। इसके बाद आयोजकों ने सुखोई जेट के टायरों को रथ में लगाने का फैसला किया, क्योंकि इसका व्यास (डायमीटर) बोइंग के टायरों से मिलता-जुलता है। मैनेजमेंट ने कंपनी से सुखोई के 4 टायर खरीदे हैं। टायरों को इन दिनों रथ में फिट किया जा रहा है। जगन्नाथ रथ यात्रा हर साल आषाढ़ माह में शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि से शुरू होती है और शुक्ल पक्ष के 11वें दिन जगन्नाथ जी की वापसी के साथ यात्रा का समापन होता है। इस बार रथ यात्रा की शुरुआत 27 जून से होगी। यह 8 दिन तक चलेगी। 5 जुलाई को समाप्त होगी।

एक्ट्रेस ममता कुलकर्णी बोलीं-मैंने समाधि में कल्कि अवतार देखा

संभल (एजेंसी)। ममता कुलकर्णी रविवार को संभल के कल्कि धाम पहुंचीं। यहां मंत्रोच्चारण के बीच उनका स्वागत किया। बॉलीवुड अभिनेत्री और किन्नर अखाड़े की महामंडलेश्वर ममता कुलकर्णी रविवार को पहली बार संभल पहुंचीं। उन्होंने कहा- जब मैंने समाधि ली थी, तब कल्कि अवतार देखा था। वे अमर हैं, कई वर्षों से सह्याद्रि पर्वत पर तपस्या कर रहे हैं। ममता सुबह 11 बजे दिल्ली से करीब डेढ़ करोड़ की कार से कल्कि धाम पहुंचीं। यहां पुजारियों ने मंत्रोच्चारण के साथ उनका स्वागत किया।

एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला आईएसएस पर पोषण से जुड़े प्रयोग करेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। केन्द्र सरकार में स्पेस विभाग के मंत्री जितेन्द्र सिंह ने शनिवार को बताया कि भारत के अंतरिक्ष यात्री ग्रुप कैप्टन शुक्ला अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर पौधों पर रिसर्च और अंकुरण (बीजों से पौधे उगने) से जुड़े वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए बायोटेक किट्स लेकर जाएंगे ये प्रयोग इसरो और डिपार्टमेंट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी ने मिलकर तैयार किए हैं, जिनमें नासा भी सहयोग कर रहा है। जितेन्द्र



सिंह ने बताया कि ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला इस मिशन में पायलट की भूमिका में होंगे। उनके साथ अमेरिकी अंतरिक्ष

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में स्वास्थ्य सेवाओं का निरंतर विस्तार हो रहा: नड्डा

नई दिल्ली (एजेंसी)। केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा ने शनिवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में स्वास्थ्य सेवाओं का निरंतर विस्तार हो रहा है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में चिकित्सा सुविधाओं का सुदृढ़ीकरण करना केन्द्र सरकार और स्वास्थ्य मंत्रालय की प्राथमिकताओं में शामिल है। नड्डा यहां मुख्यमंत्री निवास पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा बैठक को सम्बोधित कर रहे

थे। उन्होंने कहा कि राजस्थान में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के मार्गदर्शन में उल्लेखनीय कार्य हो रहे हैं, जिनसे 'निरामय राजस्थान' की संकल्पना साकार होने लगी है। एक आधिकारिक बयान के अनुसार नड्डा ने राजस्थान में केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं की प्रगति की सराहना की। मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि स्वस्थ राजस्थान के लक्ष्य को साकार करने के लिए केन्द्र व राज्य सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं की निरंतर समीक्षा की जा रही है।

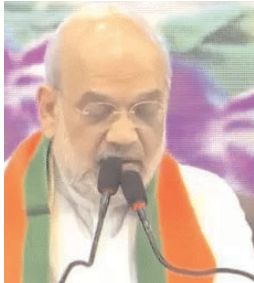


दिल्ली में आंधी चली-बारिश शुरु

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली-हृष्टक में शनिवार दोपहर मौसम बदला। तेज आंधी चली। इसके कारण धूल की चादर पूरे दिल्ली-एनसीआर पर छ गई। इसके बाद कुछ देर बाद ही तेज आंधी शुरू हो गई। मौसम विभाग ने यहां आंधी-बारिश का अर्रेंज अलर्ट जारी किया है। पूर्वोत्तर राज्यों में तेज बारिश से स्थिति गंभीर होती जा रही है। गृह मंत्री अमित शाह ने भी आज असम, अरुणाचल और सिक्किम के सीएम और मणिपुर के राज्यपाल से फोन पर बात की। राज्यों को केंद्र से हरसंभव मदद का आश्वासन दिया। पूर्वोत्तर

शाह बोले- पहलगाम हमला हुआ तो ममता बनर्जी चुप रहीं

कोलकाता (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को कोलकाता में कहा- ममता बनर्जी मुस्लिम वोट बैंक को खूश करने के लिए ऑपरेशन सिंदूर और वक्फ संशोधन एक्ट का विरोध कर रही हैं। ममता ऐसा करके देश की माताओं और बहनों का अपमान कर रही हैं। पश्चिम बंगाल में 2026 के विधानसभा चुनाव में राज्य की माताएं और बहनें ऑपरेशन सिंदूर की आलोचना करने के लिए सीएम ममता और टीएमसी को सबक सिखाएंगी। दो



दिन के पश्चिम बंगाल दौरे के पहले दिन शाह ने विजय संकल्प कार्यक्रम में पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा- जब पहलगाम आतंकी हमले में बंगाल के पर्यटक मारे गए, तब ममता बनर्जी चुप रहीं। मुर्शिदाबाद दंगा राज्य प्रायोजित था। गृह मंत्रालय

ने यहां टीएमसी की तैनाती की बात कही थी, लेकिन ममता सरकार ने ऐसा नहीं होने दिया, जिससे हिंसा जारी रहे। शाह ने कहा कि वक्फ संशोधन एक्ट को लेकर मुर्शिदाबाद में हुए दंगों में झूठ के कई सीनियर लीडर शामिल थे। दंगों में 3 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। ममता बनर्जी तृष्णिकरण की राजनीति के लिए कानून के खिलाफ हैं। शाह ने कहा कि टीएमसी बांग्लादेश से अवैध चुसपैठ को बढ़ावा दे रही है।

आर्मी अफसर की याचिका खारिज, बर्खास्तगी का आदेश बरकरार

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने भारतीय सेना के एक अधिकारी की बर्खास्तगी को सही ठहराया है, जिसे धार्मिक परेड में हिस्सा न लेने के कारण 2017 में सेवा से हटा दिया गया था। अधिकारी सैमुअल कमलेसन ने यह कहते हुए परेड में शामिल होने से इनकार कर दिया था कि वे ईसाई धर्म से हैं। कमलेसन ने कोर्ट में याचिका दायर कर बर्खास्तगी को चुनौती दी थी। उन्होंने पेंशन और ग्रेज्युटी की मांग के साथ नौकरी पर दोबारा बहाल करने की अपील की थी। लेकिन 30 मई को जस्टिस नवीन चावला और जस्टिस शालिंदर कौर की पीठ ने सेना के

फैसले को बरकरार रखा। हमारी सेना सभी धर्मों, जातियों और क्षेत्रों के लोगों से बनी है, जिनका एकमात्र उद्देश्य देश की रक्षा करना है। सेना की एकता उनकी वर्दी से बनती है, न कि धर्म या जाति से। कमलेसन का व्यवहार सेना के सेक्युलर सिद्धांतों के खिलाफ कमलेसन मार्च 2017 में कैबेलरी रेजिमेंट में लेफ्टिनेंट पद पर भर्ती हुए थे। उन्हें बी स्कान्ड्रन का टूप लीडर बनाया गया था, जिसमें अधिकतर सिख जवान शामिल थे। कमलेसन ने अपनी याचिका में कहा कि उनकी रेजिमेंट में मंदिर और गुरुद्वारा तो हैं, लेकिन सभी धर्मों के लिए कोई सर्व धर्म स्थल नहीं था।

राजस्थान सहित 8 राज्यों में एनआईए की छापेमारी

जयपुर (एजेंसी)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने राजस्थान सहित 8 राज्यों में छापे मारे हैं। एजेंसी पाकिस्तान के लिए जासूसी करने वालों पर कार्रवाई कर रही है। इस ऑपरेशन को गोपनीय रखा गया है। इस दौरान, बड़ी संख्या में संदिग्ध लोगों और उनसे मिले गैजेट्स की जांच की जा रही है। एनआईए का एक्शन शनिवार सुबह शुरू हुआ था। एनआईए के सूत्रों के अनुसार जासूसी के शक में राजस्थान के तीन जगहों पर छापेमारी की गई है। हालाँकि, ये साफ नहीं है कि टीमें किन शहरों में पहुंची हैं। राजस्थान के अलावा दिल्ली, महाराष्ट्र, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, असम और पश्चिम बंगाल

राज्यों में 15 ठिकानों पर छापेमारी की गई है। संदिग्धों के घरों, कार्यालयों में दबिश दी गई है। सच के दौरान एनआईए की टीम को कई इलेक्ट्रॉनिक गैजेट, पैसें का ट्रांजेक्शन, मोबाइल कॉल डिटेल्, मोबाइल से फोटो और मैसेज रिकवर्ड हुए हैं। इस दौरान डिटेन किए गए लोगों से पूछताछ की जा रही हैं। हाल ही में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने डीग के दो भाइयों को जासूसी के आरोपों में गिरफ्तार किया था। आरोप है कि दोनों भाई पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी के कांटेक्ट में थे। दोनों आरोपी पाकिस्तान भी जा चुके हैं। सूत्रों के अनुसार दोनों ने जासूसी करने की ट्रेनिंग भी ली है।

महबूबा बोलीं- जम्मू-कश्मीर भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध का मैदान बना

श्रीनगर (एजेंसी)। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने शनिवार को कहा कि जम्मू-कश्मीर को भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध का मैदान नहीं, बल्कि दोस्ती और समझ का पुल बनना चाहिए। पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर हमेशा युद्ध और हिंसा का सबसे ज्यादा नुकसान झेलता रहा है।



हमारी हालत दो हाथियों की लड़ाई में कुचले जाने वाले घास जैसी हो गई है। महबूबा ने कहा कि पीडीपी हमेशा शांति की बात करती रही है और लोगों की भावनाओं को आवाज देती रही है। हमें युद्ध के डर को

खत्म करना होगा ताकि लोग अपनी जिंदगी की प्लानिंग कर सकें और अर्थव्यवस्था को फिर से खड़ा किया जा सके। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला की पाकिस्तान के खिलाफ सख्त सैन्य कार्रवाई की मांग समेत नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेताओं के हालिया बयानों पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि इस तरह के बयान खतरनाक सोच को दर्शाते हैं।

कमल हासन के बयान पर नहीं थम रहा विवाद

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक्टर कमल हासन के कन्नड़ भाषा पर दिए बयान पर विवाद बढ़ता जा रहा है। शनिवार को कुछ संगठनों ने बेंगलुरु के सिनेमाघरों में जाकर कमल हासन की फिल्म 'टाग लाइफ' न दिखाने की अपील की। वहीं, कमल हासन के बयान को लेकर चल रहे बढ़ते विवाद के बीच अभिनेता शिव राजकुमार ने अपनी मातृभाषा के प्रति

अपनी अटूट प्रतिबद्धता को फिर से दोहराया है। एक्टर शिव राजकुमार ने कहा, कन्नड़ मेरी पहली पसंद है, इसमें कोई शक नहीं। सभी भाषाएं मेरे लिए जरूरी हैं, लेकिन एक मातृभाषा के रूप में, कन्नड़ मेरी प्राथमिकता है। मैं कन्नड़ के लिए अपनी जान भी दे सकता हूँ। जब भी कर्नाटक को लेकर कोई मुद्दा आता है, तो सबसे पहले मैं ही वहां होता हूँ।

मल्लिकार्जुन खड़गे ने संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग दोहराई

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने रविवार को ऑपरेशन सिंदूर और पहलगाम में हुए आतंकी हमले पर चर्चा के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाने की अपनी पार्टी की मांग को एक बार फिर दोहराया है। पत्रकारों से बात करते हुए खड़गे ने कहा कि केंद्र सरकार को पाकिस्तान से सीख लेनी चाहिए। उन्होंने बताया कि पाकिस्तान ने इन घटनाओं पर विचार-विमर्श करने के लिए अपनी संसद का सत्र बुलाया है, और भारत को भी इस मामले में वैसी ही गंभीरता दिखानी चाहिए। खड़गे ने इस बात पर जोर दिया कि पूरा देश सशस्त्र बलों के साथ मजबूती से खड़ा है और उन्होंने



राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर एकजुटता का आह्वान किया। उन्होंने सभी राजनीतिक नेताओं से संयम बरतने और सैन्य कार्रवाई का राजनीतिकरण करने से बचने का आग्रह भी किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर कटाक्ष करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, हमें पता होना चाहिए कि कब क्या बोलना है। राष्ट्रीय मामलों में एकता होनी चाहिए और अपने विरोधियों को हराने

पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। देश भर के सभी नेताओं को राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों में चुप रहना चाहिए। इस बारे में बोलने से पहले यह समझना बेहतर है कि क्या हुआ है। प्रतिनिधिमंडल की रिपोर्ट आने से पहले कोई चुनाव प्रचार नहीं होना चाहिए। पीएम मोदी को चुनावी भाषण देने से बचना चाहिए। आत्म-प्रशंसा की कोई जरूरत नहीं है। पूरा देश हमारे सशस्त्र बलों के साथ खड़ा है। उन्होंने सैन्य अभियान पर प्रधानमंत्री की सार्वजनिक टिप्पणियों पर भी सवाल उठाया और कहा कि प्रधानमंत्री ने पहले कहा था कि उन्होंने सशस्त्र बलों को पूरा अधिकार दिया है।

मणिपुर में नई सरकार पर भाजपा में सहमति बनी

इंफाल (एजेंसी)। जातीय हिंसा से जूझ रहे मणिपुर में नई सरकार बनाने की कवायद तेज हो गई है। भाजपा के 27 विधायकों ने 30 मई को बैठक की थी। इसमें नई सरकार बनाने पर सहमति बन गई है। बैठक से पूर्व मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह और स्पीकर रहे सत्यव्रत सिंह को दूर रखा गया था। बैठक में बीरेन सिंह के खिलाफ विद्रोह करने वाले भाजपा विधायकों के साथ-साथ 9 फरवरी को सीएम पद से इस्तीफा देने तक उनका समर्थन करने वाले विधायक भी शामिल थे। एक विधायक ने बताया कि बीरेन सिंह को नहीं बुलाया गया था।

बैठक के बाद विधायकों ने बयान जारी कर कहा है कि सरकार गठन की दिशा में काम करने के लिए व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को अलग रखने का संकल्प लिया गया है। मणिपुर विधानसभा में 60 सदस्य हैं। इनमें भाजपा के 37 विधायक हैं। इनमें से



सात कुकी-जो समुदाय से हैं जोकि बैठक में शामिल नहीं हुए थे। इंफाल राजभवन में 28 मई को एनडीए के 10 विधायकों ने राज्यपाल अजय भल्ला से मुलाकात की थी।

इनमें से एक विधायक ने बताया था, नई सरकार के ढांचे पर चर्चा हुई है। उम्मीद है कि 15 जून तक एक सरकार बन जाएगी। विधायकों ने राज्यपाल से मिलकर सरकार बनाने का दावा पेश किया था। इनमें 8 भाजपा, एनपीपी और निर्दलीय के एक-एक विधायक शामिल थे। राज्यपाल से मुलाकात के बाद भाजपा विधायक शोकचोम राधेश्याम ने कहा था कि कांग्रेस को छोड़कर 44 विधायक मणिपुर में सरकार बनाने के लिए तैयार हैं।

मणिपुर में 60 विधानसभा सीटें हैं। सरकार बनाने के लिए बहुमत का आंकड़ा 31 है। राज्य में 13 फरवरी से राष्ट्रपति शासन लागू है।

बुमराह ने वर्कलोड और जिंदगी को लेकर कही दिल की बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने हाल ही में पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान माइकल क्लार्क के पॉडकास्ट ‘बियाॅन्ड 23’ में अपने करियर, फिटनेस, पारिवारिक जीवन और वर्कलोड मैनेजमेंट को लेकर खुलकर बातचीत की। इस दौरान उन्होंने साफ कहा कि उनके लिए क्रिकेट से ज्यादा उनका परिवार अहम है। बुमराह ने कहा, मेरे लिए परिवार मेरे करियर से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक स्थायी रिश्ता है। मैं दो चीजों को बेहद गंभीरता से लेता हूँ एक है मेरा परिवार और दूसरा मेरा खेल, लेकिन इनमें भी परिवार पहले आता है। उन्होंने आगे बताया कि उनके बेटे ने अभी से गेंद से खेलना शुरू

कर दिया है, हालांकि यह समय इसके लिए उपयुक्त नहीं है। बुमराह की इस बातचीत के पीछे की एक अहम वजह हालिया चयन विवाद भी है। इंग्लैंड दौरे के लिए उन्हें कप्तानी का प्रबल दावेदार माना जा रहा था, लेकिन फिटनेस और वर्कलोड मैनेजमेंट को ध्यान में रखते हुए चयनकर्ताओं ने शुभमन गिल को कप्तान बनाने का फैसला किया। चयन समिति के अध्यक्ष अजीत अगरकर ने स्कॉड की घोषणा के समय यह स्पष्ट किया था कि बुमराह पांचों टेस्ट नहीं खेलेंगे। अपनी फिटनेस को लेकर बुमराह ने कहा, किसी भी खिलाड़ी के लिए लंबे समय तक लगातार खेलते रहना मुश्किल होता है। मैंने यह लंबे समय तक किया है

महेला जयवर्धने ने किया साई सुदर्शन की तारीफ

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 के एलिमिनेटर मुकाबले में साई सुदर्शन की शानदार अर्धशतकीय पारी भी गुजरात टाइटंस की हार से नहीं बचा सकी। मुंबई इंडियंस ने इस रोमांचक मुकाबले में गुजरात को 20 रन से हराकर टूर्नामेंट से बाहर कर दिया। साई सुदर्शन ने 49 गेंदों पर 10 चौकों और एक छक्के की मदद से 80 रनों की जोरदार पारी खेली और टीम को मुकाबले में बनाए रखा, लेकिन अन्य बल्लेबाजों से उन्हें अपेक्षित सहयोग नहीं मिला। सुदर्शन के इस प्रदर्शन ने कई क्रिकेट दिग्गजों का ध्यान अपनी ओर खींचा है, जिनमें मुंबई इंडियंस के मुख्य कोच और पूर्व श्रीलंकाई कप्तान

महेला जयवर्धने भी शामिल हैं। जयवर्धने ने युवा बल्लेबाज की तकनीक और मानसिक दृढ़ता की खुलकर प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि सुदर्शन की बल्लेबाजी देखकर उन्हें काफी आनंद आया और उन्होंने बाएं हाथ के इस बल्लेबाज को ‘शानदार’ करार दिया। साथ ही, जयवर्धने ने इंग्लैंड दौरे को लेकर उम्मीद जताई कि सुदर्शन वहां भी अपनी बल्लेबाजी से प्रभावित करेंगे। जयवर्धने ने कहा कि इंग्लैंड की परिस्थितियां चुनौतीपूर्ण होंगी, लेकिन सुदर्शन में वहां भी सफल होने की काबिलियत है। उन्होंने भरोसा जताया कि यह युवा खिलाड़ी भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में बड़ा योगदान देगा।

जेमी ओवरटन चोटिल होकर वेस्टइंडीज दौरे से बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड क्रिकेट टीम को वेस्टइंडीज दौरे के बीच एक बड़ा झटका लगा है। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज ऑलराउंडर जेमी ओवरटन हाथ की उंगली में चोट के चलते वनडे और टी20 सीरीज के शेष मुकाबलों से बाहर हो गए हैं। यह चोट उन्हें एजबेस्टन में खेले गए पहले वनडे मुकाबले के दौरान लगी, जब उन्होंने एक रिटर्न कैच पकड़ने की कोशिश की। इंग्लैंड ने उस मुकाबले में वेस्टइंडीज को 238 रन से करारी शिकस्त दी थी, लेकिन जीत के बावजूद ओवरटन की चोट टीम के लिए परेशानी का कारण बन गई है। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड ने शनिवार को एक आधिकारिक बयान जारी करते हुए बताया कि अब ओवरटन टीम से अलग होकर इंग्लैंड की मेडिकल टीम की निगरानी में रिहैबिलिटेशन प्रक्रिया से

गुजरेंगे। बोर्ड ने साफ कर दिया है कि वनडे टीम में उनकी जगह किसी खिलाड़ी को शामिल नहीं किया जाएगा। टीम के पास मैथ्यू पाटर्स और ल्यूक वुड जैसे विकल्प रिजर्व के रूप में मौजूद हैं, जबकि स्पिन विकल्प के रूप में टॉम हार्टले पर भी विचार किया जा सकता है। 31 वर्षीय जेमी ओवरटन ने पिछले साल ही वनडे क्रिकेट में डेब्यू किया था और अब तक उन्होंने कुल छह वनडे मुकाबले खेले हैं, जिसमें उन्होंने सात विकेट हासिल किए हैं। इसके अलावा उन्होंने 12 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 11 विकेट अपने नाम किए हैं। टेस्ट क्रिकेट की बात करें तो उन्होंने वर्ष 2022 में न्यूजीलैंड के खिलाफ पदार्पण किया था लेकिन इसके बाद उन्हें एक भी टेस्ट खेलने का मौका नहीं मिल पाया है।

शाहिद अफरीदी के स्वागत पर ट्रोल होने के बाद केरल समुदाय ने दी सफाई



नई दिल्ली (एजेंसी)। दुबई में केरल की एक प्रवासी कम्प्यूनिटी द्वारा पाकिस्तानी क्रिकेटर शाहिद अफरीदी के जोरदार स्वागत को लेकर सोशल मीडिया पर बवाल मच गया। इस घटना के बाद कोचिन यूनिवर्सिटी बोटेक एलुमनाई एसोसिएशन, यूएई ने माफी मांगते हुए सफाई दी है कि उनका इरादा किसी को ठेस पहुंचाना नहीं था। दरअसल, हाल ही

में दुबई में सीयूबीएए द्वारा आयोजित एक इंटर-कॉलेज डॉस प्रतियोगिता के दौरान शाहिद अफरीदी का स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिसमें लोग अफरीदी के मशहूर निकनेम बूम-बूम के नारे लगा रहे थे। वीडियो में अफरीदी केरल और वहां के खाने की तारीफ करते नजर आए। लेकिन ये गर्मजोशी भरा

इंग्लैंड लॉयंस के खिलाफ करुण नायर ने मचाया तूफान, जड़ा ताबड़तोड़ दोहरा शतक

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड लॉयंस और इंडिया ए के बीच चार दिवसीय अनधिकृत टेस्ट मैच खेला जा रहा है। इस मुकाबले में करुण नायर ने बेहतरीन दोहरा शतक ठोका है। अपनी इस पारी में नायर ने 272 गेंदों में 26 चौके और एक छक्का लगाया। बता दें कि सरफराज खान ने भी इस मुकाबले में 92 रनों की पारी खेली। लेकिन ध्रुव जुरेल शतक से चूक गए और 94 रनों की पारी उनके बल्ले से निकली।

इन तीनों खिलाड़ियों की बेहतरीन पारियों के दम पर इंडिया ए मजबूत स्थिति में है। बता दें कि, करुण नायर को इंग्लैंड के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज के भारतीय टीम में जगह मिली है। उससे पहले इस दोहरे शतक ने अब लगभग करुण नायर की प्लेइंग इलेवन में जगह पक्की कर दी है। बता दें कि, इस सीरीज के लिए सरफराज खान को ड्राप कर दिया गया था। अब सरफराज ने बेहतरीन पारी खेलकर चयनकर्ताओं को जवाब दिया है। दूसरी ओर करुण नायर ने इंग्लैंड के

खिलाफ हेडिंग्ले में होने वाले पहले टेस्ट के लिए अपनी मजबूत दावेदारी पेश की है। साथ ही इस मुकाबले में इंडिया-ए को पहला झटका छठे ही ओवर में लग गया जब कप्तान अभिमन्यु ईश्वरन महज 8 रनों के निजी स्कोर पर एडवर्क जैक का शिकार बने। फिर दूसरे सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल भी सेट होने के बाद जोश हल की गेंद पर विकेटकीपर जेम्स रेव को कैच थमा बैठे। 51 रनों पर दूसरा विकेट गिरने के बाद सरफराज खान और करुण नायर ने जबरदस्त पार्टनरशिप करके टीम की संभाला।

सरफराज और करुण नायर के बीच तीसरे विकेट के लिए 181 रनों की पार्टनरशिप हुई। सरफराज ने 119 गेंदों पर 92 रन बनाए, जिसमें 13 चौके शामिल रहे। सरफराज को जोश हल ने विकेटकीपर जेम्स रेव के हाथों कैच आउट कराया। सरफराज के आउट होने के कुछ देर बाद करुण नायर ने अपना शतक पूरा कर लिया। करुण ने फर्स्ट क्लास करियर का ये 24वां शतक रहा।



हार्दिक पंड्या और शुभमन गिल ने नहीं मिलाया हाथ

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात टाइटंस और मुंबई इंडियंस के बीच आईपीएल 2025 एलिमिनेटर मुकाबला हुआ। जिसे मुंबई ने जीत लिया और क्वालीफायर 2 के लिए क्वालीफाई किया जबकि गुजरात टाइटंस बाहर हो गई। मुंबई के यादवेंद्र स्टेडियम में खेले गए इस मुकाबले से शुभमन गिल और हार्दिक पंड्या के बीच मतभेद होने की लगातार खबरें आ रही थीं जिस पर अब खुद गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल ने विराम लगा दिया है। दरअसल, मुकाबले से पहले टॉस के समय मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पंड्या और गुजरात टाइटंस के कप्तान



शुभमन गिल के बीच एक अजीबोगरीब स्थिति पैदा हो गई दोनों ने हाथ नहीं मिलाया, जिसका वीडियो काफी वायरल हो गया।

हालांकि, हार्दिक पंड्या गिल की तरफ जरूर हाथ मिलाते के लिए बड़े लेकिन गिल की तरफ से कोई रिस्पांस नहीं मिला। ऐसे में मैदान पर

अजीबोगरीब सी स्थिति बन गई। हिन्दी कमेंट्री के दौरान भी इस बारे में बताया गया लेकिन बाद में फोटो ऐसा भी सामने आया जहां दोनों एक दूसरे से हाथ मिलाते दिखे। अब खुद शुभमन गिल ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर की है।

जिसमें उन्होंने खुद और हार्दिक पंड्या के बीच सबकुछ ठीक होने की जानकारी दी। गिल ने एक फोटो शेयर की जिसमें वे हार्दिक पंड्या के साथ दिख रहे हैं। इस फोटो के कैप्शन में शुभमन गिल ने लिखा कि, सिर्फ प्यार है इंटरनेट पर जो कुछ भी देखते हैं, उस पर यकीन मत करें।

गुजरात टाइटंस की हार के बाद इस दिग्गज ने उठाए शुभमन गिल की कप्तानी पर सवाल



नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 के एलिमिनेटर में गुजरात टाइटंस को मुंबई इंडियंस के खिलाफ हार झेलनी पड़ी। इसके बाद शुभमन गिल की कप्तानी पर सवाल उठने लगे हैं। भारतीय टीम के पूर्व बल्लेबाज राबिन उथप्पा ने प्रसिद्ध कृष्णा से पावरप्ले में गेंदबाजी कराने के फैसले को समझ से परे बताया है। गुजरात की हार के बाद शुभमन गिल आलोचकों के निशाने पर हैं। खासतौर पर पावरप्ले में प्रसिद्ध कृष्णा से गेंदबाजी कराने की बात हजम नहीं हो रही है। लीग स्टेज तक प्रसिद्ध कृष्णा मिडिल ओवर में गेंदबाजी कर रहे थे। उनके ज्यादातर विकेट भी इसी दौरान गेंदबाजी करते हुए आए हैं। प्रसिद्ध के नाम इस सीजन 15 ओवरों में 25 विकेट हैं। जियोस्टार पर गिल की रणनीति पर सवाल उठाते हुए राबिन उथप्पा ने कहा कि जीटी की रणनीति रिफ़ैक्टिव की जगह, प्रोएक्टिव थी। मिडिल ओवर में सफल होने के बावजूद प्रसिद्ध कृष्णा से शुरुआती ओवरों में गेंदबाजी कराने की बात समझ नहीं आई। उथप्पा ने कहा कि प्रसिद्ध कृष्णा का पहला ओवर महंगा रहा। इसके बाद वह कभी ट्रैक पर लौट ही नहीं आए। जीटी की टीम इसकी भरपाई नहीं कर पाई। इसके अलावा उनकी फील्डिंग भी काफी खराब रही। उन्होंने कहा कि आप इसतरह से थोक के भाव में कैच छोड़कर चैंपियनशिप जीतने के बारे में सोच भी नहीं सकते। बता दें कि, इस मैच में गिल भी बल्ले से कुछ कमाल नहीं दिखा पाए। वह सिर्फ एक रन बनाकर ट्रेट बोल्ट का शिकार बने।

आईपीएल 2025 फाइनल से पहले म्यूनिख पहुंचे आईसीसी के अध्यक्ष जय शाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। जय शाह पिछले साल आईसीसी चेयरमैन की कुर्सी पर बैठे थे। उसके बाद उन्होंने लगातार वैश्विक स्तर पर क्रिकेट की लोकप्रियता बढ़ाने का प्रयास किया है। महिला क्रिकेट को बढ़ावा देने से लेकर 2028 ओलंपिक में क्रिकेट की एंट्री जैसे प्लान को सफल बनाने के लिए जय शाह प्रतिबद्ध दिखाई पड़े हैं। अब उन्होंने यूएई चैंपियंस लीग 2024-25 के फाइनल से पहले यूएफा के अध्यक्ष अलेक्जेंडर सेफरिन से मुलाकात की है। चैंपियंस लीग का फाइनल मैच पेरिस सेंट जर्मेन और इंटर मिलान के बीच खेला जाना है। खिताबी फिफ्ट म्यूनिख के आलियांज अरिना में होगी, जिससे पहले आईसीसी चेयरमैन जय शाह ने कहा कि म्यूनिख में क्रिकेट के प्रतिनिधि के रूप में जाना उनके लिए सम्मान की बात रही। वहीं जय शाह ने सोशल मीडिया पर लिखा कि, म्यूनिख में क्रिकेट का प्रतिनिधि बनना गौरव का विषय रहा। चैंपियंस लीग के फाइनल से पहले श्वेड प्रेसिडेंट अलेक्जेंडर सेफरिन से मिला। खेल जगत की बड़ी हस्तियों से मिलना हमेशा सम्मान की बात होती है और आईसीसी निरंतर क्रिकेट को वैश्विक स्तर पर लोकप्रियता दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है।



बता दें कि, इस साल जय शाह ने अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के प्रेसिडेंट थॉमस बाक से मुलाकात की थी। 2028 लॉस एंजेलिस ओलंपिक्स में क्रिकेट की वापसी होने वाली है, जिसमें कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार सिर्फ 6 टीम ही हिस्सा लेने वाली है।

भारत ने एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप में जीते 24 पदक

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने 26वीं एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप में एक नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड, कई व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन और अंतिम दिन छह पदकों के साथ कुल 24 पदकों के साथ अपना अभियान खत्म किया। भारतीय खिलाड़ी प्रतियोगिता के आखिरी दिन शनिवार को स्वर्ण पदक जीतने में नाकाम रहे लेकिन उन्होंने शानदार प्रदर्शन से तीन रजत और इतने ही कांस्य पदक हासिल किए।

पारुल चौधरी ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए दूसरा रजत पदक जीता और भाला फेंक खिलाड़ी सचिन यादव भी दूसरे स्थान पर रहे जबकि धावक अनिमेष कुजूर ने राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ते हुए कांस्य पदक जीता। विथ्या रामराज और पूजा ने भी अपनी-अपनी स्पर्धाओं में कांस्य पदक जीते। अभिनया राजराजन, स्नेहा एसएस, श्रवनी नंदा और नित्या गंधे की चौकड़ी ने महिलाओं की चार गुणा 400 मीटर रिले में सत्र के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 43.86 सेकंड के समय के साथ रजत पदक हासिल किया जो इस प्रतियोगिता में भारत का आखिरी पदक रहा।

भारत का अभियान इस तरह आठ स्वर्ण, 10 रजत और छह कांस्य पदकों के साथ खत्म हुआ। भारतीय दल पिछले सत्र में 27 पदक जीते थे लेकिन जब स्वर्ण पदकों की संख्या छह थी। पारुल



महिलाओं की 5000 मीटर दौड़ में 15 मिनट 15.33 सेकंड (15'15.33 सेकंड) का समय लेकर दूसरे स्थान पर रहीं। उन्होंने इससे पहले 3000 मीटर मीटर स्टीपलचेज में भी रजत पदक जीता था। पुरुषों की भाला फेंक स्पर्धा में उभरते सितारे 25 वर्षीय यादव ने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 85.16 मीटर तक भाला फेंका। वह मौजूदा ओलंपिक चैंपियन अरशद नदीम से पीछे रहे, जिन्होंने 86.40 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ स्वर्ण पदक जीता। उत्तर प्रदेश में बागपत के निकट खेकड़ा गांव के एक किसान परिवार में जन्में यादव का इससे पहले व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 84.39

मीटर था। इस स्पर्धा में भाग ले रहे भारत के एक अन्य खिलाड़ी यशवीर सिंह ने भी प्रभावित किया तथा 82.57 मीटर का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए पांचवां स्थान हासिल किया। इससे पहले कुजूर ने प्रतियोगिता के अंतिम दिन पुरुषों की 200 मीटर दौड़ में शानदार प्रदर्शन करते हुए 20.32 सेकंड का नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाते हुए कांस्य पदक जीता। इस 21 वर्षीय खिलाड़ी ने 20.40 सेकंड का अपना पिछला रिकॉर्ड बेहतर किया, जो उन्होंने इस वर्ष की शुरुआत में राष्ट्रीय फेंडरेशन सीनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में बनाया था।

सतना में अवैध अस्पताल पर प्रशासन की कार्रवाई बिना रजिस्ट्रेशन चल रहे हॉस्पिटल को किया सील, मरीज जिला अस्पताल शिफ्ट



मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई करते हुए बिना रजिस्ट्रेशन चल रहे एक निजी अस्पताल को सील कर दिया। हेल्थ केयर सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, ओल्ड आरटीओ ऑफिस भरहुत नगर में की गई कार्रवाई एसडीएम राहुल सिलाडिया के नेतृत्व में हुई। रविवार को निरीक्षण के दौरान अस्पताल में एक मरीज गणपत सिंह (23) भर्ती

मिला। उसे तत्काल जिला अस्पताल शिफ्ट किया गया। जांच में तीन अन्य मरीजों मोतीलाल कोल, के.पी.एस. तिवारी और साइना चौधरी के इलाज से जुड़े दस्तावेज भी मिले, जिन्हें जब्त कर लिया गया। स्वास्थ्य विभाग को मिली शिकायत के बाद की गई जांच में पाया गया कि अस्पताल मध्यप्रदेश उपचार्यगृह तथा रुजोपचार अधिनियम, 1973 और नियम, 1997 (यथासंशोधित

2021) की धारा 3 का उल्लंघन कर रहा था।

नोटिस जारी कर कार्रवाई की जाएगी: निरीक्षण दल में एसडीएम सिलाडिया के अलावा डॉ. अमर सिंह (नोडल अधिकारी), आशुतोष प्यासी (शाखा लिपिक), पटवारी अखंड प्रताप सिंह और अनूप पांडे शामिल थे। एसडीएम ने बताया कि अस्पताल प्रबंधन को नोटिस जारी कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

रीवा में बाइकर्स गैंग ने फिर महिला से की लूट की वारदात

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा शहर में सक्रिय बाइकर्स गैंग ने एक बार फिर महिला से लूट की वारदात को अंजाम दिया है। बदमाश ऑटो से उतरते ही पीड़ित महिला का पर्स छीनकर फरार हो गए। घटना उस वक्त हुई जब पीड़ित परिवार रानी कमलापति ट्रेन में सवार होकर रीवा आया और रेलवे स्टेशन से ऑटो में सवार होकर शहर के ठेकहा तिराहे पर पहुंचा तभी ऑटो में सवार महिला सहित उसका परिवार जैसे ही नीचे उतरा तभी बाइक सवार बदमाशों ने झपट्टा मार कर महिला का पर्स छीना और फरार हो गए। पीड़ित महिला के पति ने शोर मचाते हुए उनका पीछा करने का भी प्रयास भी किया लेकिन तब तक बदमाश काफी दूर निकल चुके थे। घटना के संबंध में पीड़ित महिला राखी अग्रवाल के पति सुशील अग्रवाल ने बताया कि बैग में दस हजार नगदी सहित सात तोला सोना भी रखा था। पीड़ित परिवार ने सिविल लाइन थाने में घटना की शिकायत दर्ज कराई है। जिस पर पुलिस ने मामला दर्ज कर बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है।

रीवा में फर्जी अनुकम्पा नियुक्ति हथियाने वाले भूत्य पर केस दर्ज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में शिक्षा विभाग में फर्जी अनुकंपा नियुक्ति मामले में पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया है। आरोपी ने फर्जी दस्तावेज तैयार कर अनुकम्पा नियुक्ति हासिल की थी, जिसका खुलासा होने पर उसके खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया गया है। बता दें कि 11 अप्रैल 2025 को जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय से अनुकंपा नियुक्ति का आदेश जारी हुआ था, जिसमें पुत्र बृजेश कुमार कोल निवासी परसिया थाना जवा को भूत्य के पद पर अनुकंपा नियुक्ति देने का उल्लेख किया गया था। यह नियुक्ति गोवं विकासखंड के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जोड़ौरी में भूत्य के पद पर की गई थी। बृजेश की जोड़ौरी में 17 अप्रैल को ज्वाइन भी करा ली गई थी। संबंधित ने जब अप्रैल में किए गए कार्यों की वेतन मांगी तो जोड़ौरी प्राचार्य ने दस्तावेजों का परीक्षण शुरू कराया। पूरे मामले की जांच की गई तब फर्जीबाड़े का खुलासा हुआ। जिला शिक्षा अधिकारी सुदामा प्रसाद गुप्त ने इसकी शिकायत सिविल लाइन थाने में दर्ज कराई, जिस पर पुलिस ने धोखाधड़ी का मामला दर्ज कर लिया है। अब पुलिस मामले की जांच कर तथ्यों को जुटाने में लगी है।

4 जून को रीवा आएंगे सीएम, हितग्राहियों को करेंगे लाभान्वित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का 4 जून को रीवा जिले का भ्रमण कार्यक्रम प्रस्तावित है। मुख्यमंत्री मनगवां विधानसभा क्षेत्र के गोवं में आयोजित महिला स्वसहायता समूह के सदस्यों के सम्मेलन में शामिल होंगे। महिला स्वसहायता समूह के सम्मेलन में शामिल होने के साथ मुख्यमंत्री शासन की विभिन्न योजनाओं से हितग्राहियों को लाभान्वित करेंगे। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने प्रस्तावित कार्यक्रम स्थल गोवं स्टेडियम का भ्रमण कर तैयारियों का जायजा लिया। कलेक्टर ने मंच व्यवस्था, महिलाओं के बैठने की व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था, वाहनों की पार्किंग, पेयजल व्यवस्था, साउंड सिस्टम और प्रकाश व्यवस्था तथा दोरे से जुड़ी अन्य व्यवस्थाओं के संबंध में अधिकारियों को निर्देश दिए।

अजीबोगरीब चोरी, कार से आये बदमाश, बाइक लेकर हुए फरार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा शहर में अजीबोगरीब चोरी का मामला सामने आया है। कार में सवार होकर आया बदमाश अपने वाहन को छोड़कर एक युवक की बाइक लेकर चंपत हो गया। पीड़ित की सूचना पर पुलिस ने कार को कब्जे में ले लिया है। सिटी कोतवाली के ग्राम जोरी निवासी सत्यम तिवारी अपनी बाइक से अमहिया दुकान जा रहा था। रात करीब साढ़े नौ बजे उसने ललपा के पास बाइक रोकी और कुछ दूरी पर काम से चला गया। उसी दौरान एक बदमाश कार से आया और अपनी गाड़ी वहीं रोककर सत्यम की बाइक में पहले से चाबी लगी होने का फायदा उठाकर आसानी से लेकर भाग निकला। युवक जब वापस आया तो उसकी बाइक गायब थी और पास में कार खड़ी थी। सूचना पर पुलिस ने कार को अभिरक्षा में ले लिया है। कार किसी आनंद विश्वकर्मा की है। आशंका है कि कार चोरी की है, पुलिस उसके मालिक का पता लगाने का प्रयास कर रही है। थाना प्रभारी विकास कपीस ने बताया कि मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश जारी है।



सतना में इथेनॉल प्लांट के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन ग्रामीणों ने दी चेतावनी, 15 दिनों में उनकी मांगों पर कार्रवाई नहीं हुई, तो करेंगे उग्र आंदोलन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के मझगावां में इंडो न्यूक्लियर इथेनॉल प्लांट के खिलाफ रविवार को ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया। सतना के मझगावां में इंडो न्यूक्लियर इथेनॉल प्लांट के खिलाफ रविवार को ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया। कांग्रेस के पूर्व प्रदेश सचिव आशुतोष द्विवेदी के नेतृत्व में प्लांट के मेन गेट पर प्रदर्शन हुआ। तहसीलदार हिमांशु शुक्ला को ज्ञापन सौंपा गया है।

ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि 15 दिनों में उनकी मांगों पर कार्रवाई नहीं हुई, तो वे उग्र आंदोलन करेंगे। ग्राम पंचायत देवलहा के उमरिहा में बने प्लांट पर आरोप लगे हैं कि प्लांट से निकलने वाले धुएं से इलाके में प्रदूषण फैल रहा है। प्लांट प्रबंधन पर स्टॉप डैम से अवैध रूप से पानी निकालने का भी आरोप है। हाल ही में एक ग्रामीण की नहाते समय प्लांट की मोटर में फंसकर मौत हो गई थी।

प्लांट के 5 किमी के दायरे में लोगों को सांस लेने में दिक्कत: इसके अलावा प्लांट के 5 किलोमीटर के दायरे में लोगों को सांस लेने में दिक्कत हो रही है। सबसे ज्यादा प्रभावित मवासी जनजाति की बस्ती है, जो प्लांट से सिर्फ 300 मीटर की दूरी पर है।



ग्रामीणों का कहना है कि फैक्ट्री का धुआं और काला पाउडर खाने-पीने की चीजों में मिल रहा है। खेतों में तरल कचरा बहाया जा

रहा है, जिससे कृषि को नुकसान हो रहा है। प्रदर्शन के दौरान पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे।

सतना पुलिस और नगर निगम टीम ने रेस्क्यू कर निकाला और अस्पताल पहुंचाया

सूखे कुएं में मिला तीन माह का नवजात, रोने की आवाज सुनकर राहगीर ने देखा



सड़क किनारे खुले कुएं में गिरा युवक



सतना में हिनौता गांव के पास शनिवार रात साढ़े 11 बजे एक युवक सूखे कुएं में गिर गया। सभापुर पुलिस और राहगीरों ने रस्सी की मदद से उन्हें तीन घंटे बाद बाहर निकाला। गंभीर हालत में युवक को बिरसिंहपुर के प्राथमिक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। जानकारी के अनुसार घायल बालकृष्ण त्रिपाठी(29) बाइक से दो साथियों के साथ बिरसिंहपुर से अपने गांव झखौरा जा रहा था। हिनौता गांव के पास पेशाब करने के लिए रुकने पर वो सड़क किनारे स्थित 60 फिट गहरे सूखे कुएं में गिर गया। उसके साथियों ने शोर सुनकर राहगीरों और पुलिस को सूचना दी। उल्लेखनीय है कि इंदौर हादसे के बाद 3 अप्रैल 2023 को जिला प्रशासन ने सड़क किनारे खुले या बिना जगत वाले कुएं और खुले बोर वेल को बंद करने के आदेश जारी किए थे। लेकिन स्थानीय प्रशासन ने इस पर कोई कार्रवाई नहीं की।

के रोने की आवाज सुनकर लोगों ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंचकर नगर निगम टीम और स्थानीय लोगों की मदद से बच्चे को

सकुशल बाहर निकाला गया। 3 माह का बच्चा किसका है और वह कुएं में कैसे पहुंचा, इसकी जांच की जा रही है।

कलेक्टर आज करेंगी टीएल पत्रों की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल 2 जून को कलेक्ट्रेट सभागार में सुबह 11 बजे से आयोजित बैठक में टीएल पत्रों की समीक्षा करेंगी। बैठक में सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण, जल गंगा संवर्धन अभियान, पेयजल व्यवस्था तथा मुख्यमंत्री जी के 4 जून को प्रस्तावित दौरे की तैयारियों की भी समीक्षा की जायेगी। सभी संबंधित अधिकारियों को बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।

आपदा प्रबंधन की तैयारी बैठक आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभागार में 2 जून को आपदा प्रबंधन की तैयारी बैठक आयोजित की गई है। बैठक में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल बाढ़ नियंत्रण एवं आपदा प्रबंधन की तैयारियों की विभागवार समीक्षा करेंगी। बैठक साप्ताहिक टीएल बैठक के बाद आरंभ होगी। सभी संबंधित अधिकारियों से बैठक में उपस्थित रहने का अनुरोध किया गया है।



मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। संभाग के सभी जिलों में 30 मार्च से जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। कमिश्नर बीएस जामोद ने अभियान के तहत किये जा रहे कार्यों और निर्माण कार्यों की निगरानी के लिए 6 संभाग स्तरीय अधिकारियों के दल तैनात किये हैं।

इन दलों द्वारा भ्रमण करके जल गंगा संवर्धन अभियान का जायजा लिया जा रहा है। गत दिवस संयुक्त संचालक पशुपालन डॉ. राजेश मिश्रा, परिवहन अधिकारी मनीष

त्रिपाठी एवं आपूर्ति नियंत्रक ने सतना जिले के रामपुर बघेलान विकासखण्ड एवं मेहर जिले के अमरपाटन विकासखण्ड में जल संरक्षण कार्यों का जायजा लिया। दल ने खेत तालाब निर्माण तथा कुएं में रिचार्ज पिट निर्माण का अवलोकन किया।

इस दल का नेतृत्व चीफ इंजीनियर लोक निर्माण विभाग संजय खाण्डे ने किया। अधीक्षण यंत्री पीएचई तथा अन्य अधिकारियों ने रीवा जिले के सिरमौर विकासखण्ड की ग्राम पंचायत बरा

में चेकडैम निर्माण एवं बोरीबंधन का निरीक्षण किया। इसी दल ने सीधी जिले के मझौली विकासखण्ड के ग्राम दादर में हितग्राही सुदामा साहू के द्वारा बनाये जा रहे खेत तालाब एवं कुएं में रिचार्ज पिट का भी निरीक्षण किया गया। इसी गांव में रामचन्द्र साहू द्वारा बनाये जा रहे खेत तालाब का निरीक्षण किया गया। ग्राम दादर में गतवर्ष चेकडैम का निर्माण कराया गया था। उसमें अभी भी पर्याप्त पानी उपलब्ध है। जो आमजनता के निस्तार और पशुओं के पीने के लिए उपयोग में लाया जा रहा है।

सतना में खरबूजा व्यापारी की दुकान से लाखों की चोरी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के कोलगावां थाना क्षेत्र के सोनवर्षा स्थित फल और सब्जी मंडी में एक खरबूजा व्यापारी की दुकान से बदमाश लाखों रुपए नकदी और मोबाइल से भरा बैग लेकर फरार हो गए।



कृष्ण नगर मुरली भवन निवासी आकाश सेवानी ने बताया कि वे सुबह अपनी दुकान पर व्यवसाय के लेनदेन के लिए बैग लेकर आए थे। बैग रखकर काम में व्यस्त हो गए, तभी तीन बदमाश दुकान में घुसे और बैग लेकर फरार हो गए।

पीड़ित ने कोलगावां थाने में शिकायत दर्ज कराई है। घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। फुटेज के आधार पर पुलिस बदमाशों की तलाश कर रही है। पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ बीएनएस की धारा 303(2) के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

युवती ने मां और भाई पर लगाया गर्भपात कराने का आरोप

युवती बोली- झूठी शिकायत कर पति को जेल भिजवाया



मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में अपहरण के आरोप में एक युवक को 9 दिन पहले जेल भेजा गया था। जिस युवती के अपहरण का आरोप था, उसी ने पूरे मामले को झूठा बताया है। पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

19 साल की युवती ने एसपी आशुतोष गुप्ता से शिकायत की है। उसने बताया कि 15 जनवरी को उसने बिरसिंहपुर में अनुज कोल के साथ हिंदू रीति-रिवाज से विवाह किया था। इसके बाद वो बैंगलोर चली गई। उसकी मां और भाई ने कोतवाली में झूठी रिपोर्ट दर्ज कराई। उन्होंने उसे बहला-फुसलाकर सतना वापस बुला लिया।

युवती ने आरोप लगाया कि उसके परिवार ने कोर्ट में भी गलत बयान दिलवाकर उसके पति को जेल भिजवा दिया। जब उसे

गर्भवती होने की जानकारी मिली, तो मां और भाई ने साजिश के तहत उसे अबॉर्शन की गोली खिलाई। उमरी मोहल्ले के एक मेडिकल स्टोर में उसका गर्भपात करा दिया गया।

‘दोषियों’ के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी : युवती ने इस मामले में मां और भाई के अलावा लालपुर-सगमनिया की दो महिलाओं पर भी आरोप लगाए हैं। एसपी ने मामले की जांच सिविल लाइन टीआई योगेंद्र सिंह परिहार को सौंपी है। टीआई ने कहा कि मामले की विस्तृत जांच कर साक्ष्य जुटाए जाएंगे और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

सतना में तेज हवाओं के साथ बारिश, कई पेड़ गिरे, बिजली की तारें भी टूटी



मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में रविवार दोपहर के बाद मौसम में अचानक बदलाव आया। उमस के बीच आसमान में बादल छा गए और तेज हवाओं के साथ जिले के कई इलाकों में बारिश हुई। इस दौरान ग्रामीण इलाकों में तेज हवाओं के कारण कई स्थानों पर पेड़ गिरे और बिजली की तारें टूटीं।

मौसम विभाग के अनुसार, हवा की रफ्तार 30 किलोमीटर प्रति घंटा रही। रविवार सुबह अधिकतम तापमान 38.7 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दोपहर में हुई बारिश के बाद तापमान में 7 डिग्री की गिरावट आई।

शहर में रुक-रुक कर बारिश का सिलसिला जारी रहा। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, यह बदलाव प्री-मानसून गतिविधियों का परिणाम है। अगले 2 दिनों तक मौसम ऐसा ही बने रहने का पूर्वानुमान है।

जल गंगा संवर्धन अभियान में हो रहा जल संरचनाओं का निर्माण



मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले भर में जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत पानी को सहेजने के लिए जल संरचनाओं का निर्माण किया जा रहा है। इस संबंध में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर ने बताया कि अभियान के तहत मऊगंज जनपद पंचायत के ग्राम पंचायत सरैहा में खेत तालाब का निर्माण किया जा रहा है। यहां गत दिवस जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, सहायक यंत्री, गांव के सरपंच तथा स्वसहायता समूह की महिलाओं ने

मिलकर जल संरक्षण के लिए रैली निकाली। कार्यपालन यंत्री ग्रामीण यांत्रिकीय सेवा ने त्थीयर विकासखण्ड की ग्राम पंचायत घटैहा में चल रहे अमृत सरोवर का निर्माण किया जा रहा है। इस कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर ने बताया कि अभियान के तहत मऊगंज जनपद पंचायत के ग्राम पंचायत सरैहा में खेत तालाब का निर्माण किया जा रहा है। यहां गत दिवस जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, सहायक यंत्री, गांव के सरपंच तथा स्वसहायता समूह की महिलाओं ने